Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वे अकंतदुक्खा य,
अओ सव्वे अहिंसगा।

कोई भी जीव दुःख नहीं चाहता, इसलिए सभी जीव अहिंस्य हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 12 • 27 दिसंबर, 2021 - 2 जनवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-12-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

शांति के साथ चिंतन करने से मिलता है समस्या का समाधान : आचार्यश्री महाश्रमण

निवाई, २० दिसंबर, २०२१

राजस्थान के सर्द मौसम में धर्म की अलख जगाने महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १० किमी का विहार कर निवाई के दिगंबर जैन मंदिर परिसर में पधारे। मंदिर प्रांगण में अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है–जितने भी तीर्थंकर अतीत काल में हुए हैं, अनंत हो गए हैं और जितने भी तीर्थंकर अनागत काल में होंगे, उनका आधार है–शांति। जैसे प्राणियों के लिए पृथ्वी आधार है।

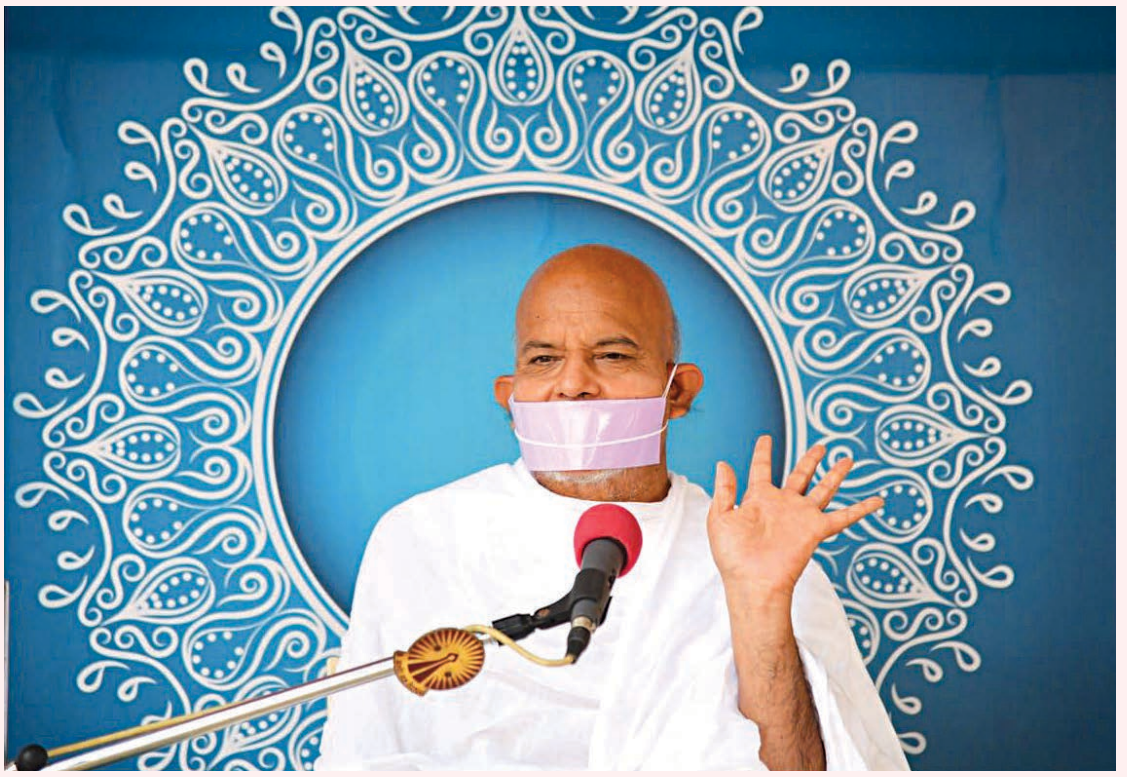

शांति के बिना केवलज्ञान हो नहीं सकता। चौदह गुणस्थानों में से बारहवाँ गुणस्थान प्राप्त हो गया तो उसमें परम शांति प्राप्त हो गई। उसके बाद केवलज्ञान की तेरहवें गुणस्थान में प्राप्ति होती है। पहले मोहनीय कर्म जाता है, फिर केवलज्ञान प्राप्त होता है। दोनों साथ-साथ नहीं होते हैं। बुद्धों का बुद्धत्व, तीर्थंकरों का तीर्थंकरत्व का जो केवलज्ञान है, वो मानो शांति पर आधारित है।

तीर्थंकर होते हैं, वो जैन शासन में मानो मनुष्यों में सबसे बड़े होते हैं। धर्म के अधिकृत प्रवक्ता का तीर्थंकर से बड़ा कोई पद नहीं है। तीर्थंकर से बड़ा कोई दुनिया में अध्यात्म का अधिवक्ता नहीं है। सामान्य आदमी शांति से जीए, शांति से रहे औरों को भी शांति से रहने दो। छोटे प्राणी की भी हमारे से शांति भंग न हो।

शांति के भंग में चार तत्त्व काम कर सकते हैं–गुस्सा, लोभ, भय और चिंता। गुस्से को असफल बनाने का प्रयास करें। संतोष में शांति रहती है। यह एक प्रसंग से समझाया। जहाँ कामना है वहाँ दुःख है। पारिवारिक समस्या से चिंता हो सकती है। समस्या होना एक बात है, उसमें दुःखी होना अलग बात है। समस्या को देखना और सुलझाना सीखें। चिंता चिता के समान है। चिंता नहीं चिंतन करो। यह जीवन का पथदर्शन है।

आप गृहस्थ हैं, परिवार-समाज में भी समस्या आ सकती है। वहाँ शांति रखें। सहन करना सीखें। सहना चाहिए, पर मौके पर तरीके से कहना चाहिए। गुस्सा न करें। आज हम निवाई आए हैं, जयपुर जाना है। यहाँ जैन समाज में दिगंबर समाज का प्राधान्य लग रहा है। लोगों में भावना है, सम्मान का भाव है। स्नेह भी है। जैन समाज के हैं, यह खास बात है। मैत्री भाव बढ़िया है। परंपरा में भेद हो सकता है। हम शांति से रहें, दूसरों को शांति से रहने दें। यह आत्मा के लिए ठीक है, दूसरों के लिए भी ठीक है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में दिगंबर समाज के महावीर प्रसाद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने बताया कि ४० वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी के साथ निवाई आने का मौका मिला है। दुनिया में सबसे बड़ी चीज शांति है। तदुपरांत सायं लगभग सवा चार बजे नसिया जैन मंदिर से आचार्यश्री ने सान्ध्यकालीन विहार किया। लगभग तीन किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री नवाई के बाहरी भाग में स्थित अखिल हरियाणा गौड़ ब्राह्मण शिक्षा एवं छात्रावास समिति परिसर में पधारे। आचार्यश्री का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुरुदेव ने शांतिनाथ मंदिर में शांति का संदेश प्रदान करवाया है।

मनुष्य को अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध होना आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

कोथून, २१ दिसंबर, २०२१

अपने चरण कमल से राजस्थान की धरा को पावन बना रहे आचार्यश्री महाश्रमण जी १३ किमी का मंगल विहार कर जयपुर जिले की सीमा में पदार्पण किया। जयपुर जिले के कोथून गाँव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हम जीवन जी रहे हैं, अन्य प्राणी भी जीवन जीते हैं। कीड़े-मकौड़े भी जीवन जीते हैं, परंतु आदमी का जीवन महत्त्वपूर्ण जीवन प्रतीत हो रहा है।

आदमी जीवन कैसे जीता है, यह एक महत्त्वपूर्ण बात हो जाती है। आदमी का कर्तव्य-अकर्तव्य क्या है? हमारे जीवन में कर्तव्य का बोध और कर्तव्य का पालन यह एक विशेष बात होती है। जो अपने कर्तव्य को नहीं जानता वह चिंतनीय बात हो सकती है। जो मनुष्य अपने कर्तव्य-अकर्तव्य को नहीं जानते हैं, उन्हें इतने कष्ट आते हैं कि जिसकी उन्होंने कल्पना भी न की हो।

चोरी करना पाप है। अभाव या लोभ के कारण व्यक्ति चोरी-हिंसा व नशे में जा सकता है। अपने किए हुए कर्मों का फल भी भोगना पड़ता है। आदमी ये सोचे कि मैं दूसरों की चीजों की चोरी क्यों करूँ। ये मेरा कर्तव्य नहीं है, मैं इससे बचूँ, ऐसा भाव हो। माता-पिता का संतान के प्रति कर्तव्य हो सकता है। नागरिक का नागरिक के प्रति कर्तव्य होता है। हम कर्तव्य को समझें।

राजतंत्र हो या लोकतंत्र अनुशासन में तो रहना होगा। कहा गया है–Without duty and Discipline The duty of Democracy shall be Dumed. Death & Destruction. लोकतंत्र में धर्म-निरपेक्षता होती है। जीवन में संयम और ज्ञान भी चाहिए वरना आदमी गलत रास्ते पर जा सकता है। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार भी ज्ञान के साथ दिए जाते रहें। गोपाल कृष्ण गोखले के विद्यार्थी जीवन की घटना से समझाया।

विरोध जताने के लिए राष्ट्र की संपत्ति का नुकसान न करें। निर-अपराध प्राणी की हत्या न हो। गाँवों के लोग नशामुक्त रहें। आदमी कर्तव्य का ध्यान रखें तो जीवन अच्छा रह सकता है। हमारी आत्मा अच्छी रह सकती है। आगे भी कुछ अच्छा होने की संभावना हो सकती है। खुद के मन और जबान पर ब्रेक हो। बिना ब्रेक के गाड़ी का एक्सीडेंट हो सकता है। हम सबका जीवन अच्छा रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों को विस्तार से समझाया एवं स्थानीय लोगों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के प्रधानाचार्य शंकरलाल गुर्जर, अध्यापक रामप्रसाद चौधरी, रामेश्वर चौधरी, सरपंच प्रतिनिधि बद्रीप्रसाद चौधरी (प्रधान चाक्यू पंचायत) ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम समय का अच्छा उपयोग करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 दिसंबर, 21 - 2 जनवरी, 22

✦ *स्वयं को देखने के लिए मन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी होता है। प्रेक्षाध्यान की साधना अपने आपको देखने की साधना है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

हम जीवन परमात्म पद पाने के लिए जीएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

डिडायच, १७ दिसंबर, २०२१

शांतिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी मौसम की प्रतिकूलता की परवाह किए बिना १३ किलोमीटर का विहार कर बनास नदी के तट पर बसे डिडायच गाँव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

जिन शासन के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न होता है कि हम जीवन क्यों जीएँ? यह जीवन तो हमें मानो प्रकृति से मिल गया है। ८४ लाख जीव योनियाँ हैं, उनमें मनुष्य की भी योनियाँ हैं। मनुष्य जीवन थोड़ा विशेष होता है। जीवन तो अनेक जीवों का भी होता है, पर आदमी साधना करके परमात्मा पद को प्राप्त कर सकता है, दूसरे जीव नहीं।

यह मानव जीवन महत्त्वपूर्ण है और दुर्लभ भी है। जो महत्त्वपूर्ण होता है, वह थोड़ा दुर्लभ भी हो सकता है। मनुष्य के पास दिमाग भी है। वह सोचता है, चिंतन करता है, कल्पना करता है। दूसरे जीवों में विकास कम होता है। मनुष्य-मनुष्य के विकास में भी तारतम्यता रहती है। जन्म लेना, जीवन जीना और मर जाना ये दुनिया की व्यवस्था है। मृत्यु का सिद्धांत सब जीवों के लिए है, उसमें पक्षपात नहीं, सबके लिए समान है।

जैन शासन में कहा गया है कि धर्म को कल पर छोड़ने की बात वही कर सकता है, जिसकी मौत के साथ दोस्ती होती है। दूसरा कहता है कि मौत आएगी तो मैं पलायन कर जाऊँगा। तीसरा कहता है कि मैं तो अमर हूँ। पर ये सब कहने की बात है, मौत किसी को नहीं छोड़ती। देव भी अमर नहीं हैं।

मानव जीवन इसलिए मिला है कि कुछ परमात्मा की साधना कर आत्मा का उद्धार कर सके। योनियों में जाने से छूटकारा मिल सके। इसलिए संयम-तप से अच्छा जीवन जीएँ। जीवन में साधना-सादगी रहे। मोक्ष को पाने की कामना रहे। संन्यास तो हर कोई ग्रहण नहीं कर सकता। गृहस्थ जीवन में जितनी हो सके, उतनी साधना करें। अणुव्रत स्वीकार करें। बुरी आदतों को छोड़ें। जप-स्वाध्याय करें, ताकि मोक्ष की ओर आगे बढ़ सकें।

एक जन्म में मुक्ति नहीं मिलती और जन्म लेने पड़ेंगे। जीवन में नियम-व्रत और साधना हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि ग्रहण किए नियम को निभाने से कल्याण हो सकता है। हम जीवन परमात्म पद पाने के लिए जीएँ। जीवन में व्रत नियम हों, ताकि आत्मा का कल्याण हो सके।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के संकल्पों को समझाकर स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्कूल प्रिंसिपल कैलाश गुप्ता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय लोगों ने सत्संगत का लाभ लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि साधु तो कंचन-कामिनी के त्यागी होते हैं।

हर परिस्थिति में समता रखने से मिलती है सुख और शांति : आचार्यश्री महाश्रमण

शिवाड़, १८ दिसंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन को पावन बना रहे महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी शिवाड़ सिति धुरमेश्वर ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट द्वारा निर्मित विश्रांति निलयम पधारे।

प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास प्रवृत्ति के तीन साधन हैं—शरीर, वाणी और मन। चेतना को हम एक मुखिया मान लें। उसके ये तीन कर्मचारी हैं। शरीर से आदमी कई कार्य करता है, तो शरीर एक कर्मकर हो गया। वाणी के द्वारा बोलकर कितनों को ज्ञान, दिशा-निर्देश दिया जा सकता है। मन के द्वारा आदमी सोचता है। कल्पना और स्मृति करता है।

शरीर और वाणी तो प्रत्यक्ष हो जाते हैं, पर मन परोक्ष रहता है। पर कुछ अनूठा लग सकता है। मन की बात आँखें कह देती हैं। यह आचार्य भिक्षु के दृष्टांत से समझाया। मन एक ऐसा तत्त्व है, जो दुर्मन भी बन सकता है और सुमन भी बन सकता है। आदमी सोच-सोच के सुखी या दुःखी बन जाता है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि अच्छी चीजें हैं, फिर दुःखी क्यों बनूँ।

आदमी भौतिक सुख से खुशियाँ न मनाएँ। हर स्थिति में समता रखो तो सुख-शांति रहती है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि चिंता किस बात की है, मौत की परवाह नहीं है। जितना समय शेष है, शांति से जी लूँ। जो जीना जानता है, उसको दूसरे नहीं मार सकते। चिंतन हमारा प्रशस्त रहे।

धर्म का यह सार है कि चिंतन हमारा बढ़िया रहे। थोड़े से नुकसान से आदमी दुःखी बन जाता है। चिंतन से चित्त को प्रसन्नता मिल सकती है।

आज शिवाड़ आना हुआ है। शिव से जुड़ा स्थान है। शिव का मतलब है—कल्याण। हम लोग तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इनके तीन संकल्प समझाकर स्थानीय लोगों को ग्रहण करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट से प्रेम प्रकाश शर्मा, सकल जैन संघ से दिनेश जैन, वरिष्ठ पत्रकार शंभुदयाल मिश्रा, संदीप जैन, दुर्गाशंकर पारीक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने आठ कर्मों के बारे में विस्तार से समझाया।

गृहस्थ जीवन भी सदाचारयुक्त होना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरवाल, १४ दिसंबर, २०२१

आचार्यश्री महाश्रमण जी आज ढढाण के उस क्षेत्र में पधारे जहाँ से तेरापंथ का प्रगाढ़ संबंध रहा है। पूज्यप्रवर सूरवाल पधारे जहाँ अतीत में एक ही परिवार से २२ दीक्षाएँ हुई थीं। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए तरण-तारण ने फरमाया कि आदमी को थोड़े लाभ के लिए ज्यादा नुकसान नहीं उठाना चाहिए। यह मानो एक नीति का-सा सूत्र है कि जहाँ लाभ थोड़ा, हानि ज्यादा ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए।

हम मनुष्य जन्म को देखें, कितना महत्त्वपूर्ण जीवन है। इसको थोड़े लाभ के लिए खो दिया जाता है या इसका अच्छा लाभ उठाने का प्रयास किया जाता है। थोड़े के लिए बहुत को खो देना एक तरह से समझ की कमी जैसी बात हो जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया। हमारा यह मानव जीवन अमूल्य हीरा है, इसका उपयोग अच्छा हो। आगे तो पाई-पाई का हिसाब देना पड़ता है। जैसे कर्म किए हैं, वैसा फल भोगना पड़ेगा।

साधु तो सभी नहीं बन सकते हैं पर गृहस्थ जीवन भी सदाचारयुक्त होना चाहिए। आदमी नशा, चोरी, डकैती न करे। यह एक प्रसंग से समझाया कि जो मेरी नहीं है, वो मैं नहीं ले सकता। पैसे को लक्ष्मी कहा गया है, तो लक्ष्मी अशुद्ध न हो। ईमानदारी रखें। बेईमानी का धन घर में न आए।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने बताया था कि दो शब्द हैं—अर्थ और अर्थाभास। न्याय-नीति से कमाया गया पैसा अर्थ है। अनीति-अन्याय से कमाया गया पैसा अर्थाभास है। अर्थाभास के प्रति आकर्षण न रहे। अर्थ के साथ न्याय नीति रहे। हर दुकान में नैतिकता चाहिए। जीवन-व्यवहार में नैतिकता चाहिए।

हम लोग सूरवाल आए हैं, यहाँ की जनता में धर्म की लौ जलती रहे, ऐसी कामना हैं सूरवाल का तो हमारे धर्मसंघ को एक अवदान है। इतनी दीक्षाएँ यहाँ से हुई हैं। वर्तमान में तो नहीं दिया है। एक गाँव ने महादान दिया है। महत्त्वपूर्ण स्थान है। गुरुदेव तुलसी भी पधारे थे। आगे भी अवदान देते रहें।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने पूज्यप्रवर की यात्रा के उद्देश्यों के बारे में समझाया। आदमी इन उद्देश्यों को अपनाकर सुखी बन सकता है।

आचार्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय सभा के अध्यक्ष राजेश जैन, महिला मंडल से सीमा जैन, पारुल व सैफाली जैन एवं धर्मेश जैन ने अपने भाव व्यक्त किए। सूरवाल पंचायत समिति के निर्देशक नमोनारायण मीणा ने भी आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अल्पकालिक विश्राम के बाद भीलवाड़ा चतुर्मास के बाद से प्रायः संध्या के समय भी विहार करने के अपने क्रम को जारी रखते हुए शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी सूरवाल से प्रस्थित हुए। लगभग आठ किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री अपनी धवल सेना का कुशल नेतृत्व करते हुए सिनोली स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में पधारे। जहाँ आचार्यश्री ने रात्रिकालीन प्रवास किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 दिसंबर, 21 - 2 जनवरी, 22

पाप कर्मों के बंधन में आसक्ति का बड़ा योग होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

चौथ का बारवाड़ा,
१६ दिसंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ६ किलोमीटर का विहार कर चौथ का बारवाड़ा स्थित चौथ माता ट्रस्ट द्वारा संचालित धर्मशाला में पधारे। जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि एक आदमी ने गीली मिट्टी का गोला दीवार पर फैंका तो मिट्टी दीवार पर चिपक गई। दूसरे आदमी ने सूखी मिट्टी का गोला दीवार पर फैंका, मिट्टी दीवार पर चिपकी नहीं, नीचे गिर गई। यह एक दृष्टांत शास्त्र में दिया गया है, आसक्ति और अनासक्ति को बताने के लिए मानो एक आदमी आसक्ति से कार्य करता है, पदार्थों में, व्यक्तियों में आसक्ति रखता है, तो कर्म के पुद्गल भी चिपक जाते हैं। आसक्ति नहीं है, तो गहरा बंधन नहीं होता।

हमारा जीवन पदार्थाधारित है। जीवन जीना है तो पदार्थों का भी उपयोग करना होता है। पर उनमें आसक्ति न हो, अनासक्ति हो। आसक्ति एक प्रकार से दुःख का कारण है। अनासक्ति अदुःख का कारण है। पाप कर्म के बंधन में भी आसक्ति का बड़ा योग रहता है। अनासक्ति है, तो गहरा पाप का बंध नहीं हो सकता। आदमी संसार में रहते हुए लिप्त न रहे, जैसे कमल पत्र।

ये मोह, आसक्ति, कामना संसार में दुःख का बड़ा कारण है। कामानुवृत्ति से मनुष्य ही नहीं, देवों के भी दुःख पैदा हो जाता है। साधु अकिंचन है, पर कहीं मोह का भाव आ सकता है। साधु के त्याग है, वो बड़ी बात है। संयम है। साधु इंसान है, पर महात्मा है, इसलिए लोग वंदन करते हैं। त्याग का सम्मान है। मोह-माया छोड़ने पर संतता की प्राप्ति होती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि बहुमूल्य रत्न से महँगा संयम रत्न है।

गृहस्थ ध्यान रखें कि गलत तरीके से पैसा न कमाएँ। नीति-नियत से अर्थाजन करें। गृहस्थ के घर में पैसा भी शुद्ध रहे। अन्याय-अनीति से पैसा कमाया है तो आगे फल भोगना होगा। वर्तमान जीवन में पापाचार से बचने का प्रयास करें। जुबान से झूठ, मायामृषा न बोलें। इससे तिर्यंच गति का बंध हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया। पाप और पुण्य का फल मिलता है।

तेरापंथ सभा चौथ का बरवाड़ा से महावीर जैन, क्षेत्रीय सभा के अध्यक्ष अनिल जैन, मंत्री नरेंद झंडेवाला, दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष विनोद जैन, अक्षय गोयल, कौशल्या, चौथ का बरवाड़ा के सरपंच बसंतीलाल ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल व नीरज जैन ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। अंकित जैन ने संस्कृत भाषा में गीत का संगान किया।

पूर्व कैबिनेट मंत्री व खंडार विधायक अशोक बैरवा ने आचार्यश्री के दर्शन व मंगल प्रवचन श्रवण के पश्चात अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ जो आज मुझे अपने क्षेत्र में राष्ट्र के महान संत आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन, प्रवचन श्रवण और स्वागत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपके मंगल प्रवचन को सुनने के बाद मुझे लगा कि आपके संदेश में दुनिया को बदलने की क्षमता है। पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन संकल्पों को समझाकर स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि धर्म आचरण में आए। हमारा आचरण अच्छा होगा तो व्यक्ति अपने आपको धार्मिक कह सकता है।

सद्कार्यों में लगी आत्मा सच्ची मित्र हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवतगढ़, १५ दिसंबर, २०२१

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी १० किलोमीटर का विहार कर भव्य जुलूस के साथ महेंद्रगढ़ के माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर पधारे। भगवतगढ़ हमारे धर्मसंघ का अच्छा श्रद्धा का क्षेत्र है। पूज्यप्रवर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है—हे पुरुष! तुम ही तुम्हारे मित्र हो, फिर क्यों बाहर मित्र खोजते हो। हमारी आत्मा ही हमारी मित्र है। आत्मा ही आत्मा की मित्र या शत्रु बन जाती है।

बाहर भी दुनिया में मित्र बनाए जाते हैं। पर वे दो नंबर के हैं, पहले नंबर की मित्र हमारी आत्मा है। बुरे कार्यों में लगी हुई हमारी आत्मा हमारी दुश्मन है। सद्-कार्यों, अच्छे धर्म के कार्यों में लगी आत्मा हमारी मित्र बन जाती है। हिंसा, झूठ, चोरी आदि बुरे काम हैं। अहंकार, गुस्सा, आसक्ति भी बुरे काम हैं। अहिंसा, ईमानदारी, समता शांति में रहना अच्छे कार्य हैं।

कर्मवाद का सिद्धांत है कि प्राणी जैसा कर्म करता है, वैसा फल भोगने को मिलेगा। कर भला, होत भला। कर बुरा, होत बुरा। हमें मानव जन्म मिला है, इसको बुरे कार्यों में नहीं लगाना चाहिए। एक आदमी सोने के थाल में खाना खाने के बजाय उसमें घर का कूड़ा-करकट इकट्ठा कर बाहर फैंकता है। एक आदमी को अमृत मिल गया, उसको पीता या पिलाता नहीं बल्कि गंदे पैरों को अमृत से धोता है। एक आदमी के पास श्रेष्ठ हाथी है, पर वह उस पर सवारी न कर लकड़ी का भार ढोता है। एक आदमी को कहीं चिंतामणी रत्न मिल गया उससे वह इच्छा पूरी न करके उसको कौए को उड़ाने में काम लेता है।

मानव जीवन को पाकर पापों में जो जीवन बिता देता है, वो ना-समझ है। धर्म का सिद्धांत है कि पुनर्जन्म होता है, आत्मा अमर है। इस जन्म के बाद आत्मा नया जन्म लेती है। अच्छे कर्म किए हैं तो अच्छा फल मिल सकेगा, बुरे कर्म का बुरा फल मिलेगा। ये मानव जीवन दुर्लभ बताया गया है, जो हमें प्राप्त है, उसका हम सदुपयोग करें। पापों से बचें, धर्म का स्वाध्याय करें, तो आत्मा की निर्मलता बढ़ सकती है।

आज भगवतगढ़ आना हुआ है। यहाँ के लोगों में धर्म की भावना रहे। धर्म के साथ आचरण भी अच्छा हो। धर्म कहता है कि तुम चोरी न करो।

पूज्य आचार्य तुलसी ४० वर्ष पहले यहाँ पधारे थे। अणुव्रत की बात बताई थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान की बात बताई थी। ये बातें हमारे जीवन में आ जाएँ तो आत्मा शुद्ध बन सकती है। हम अहिंसा यात्रा में तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं। इनसे आदमी का जीवन अच्छा रह सकता है। गृहस्थ सद्मार्ग पर चलें। महात्मा न बन सको तो दुरात्मा तो न बनो। सद्-आत्मा तो बनो।

हिंदु-मुसलमान बाद की बात है, पहले हम इंसान हैं। अच्छे इंसान बनें, इंसानियत रखें, दुर्व्यवहार न हो। हर जगह विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं, पर लड़ाई-झगड़े में न जाएँ, सब में मैत्री भाव हो। दुकान में ईमानदारी का धर्म रहे। भवन में भी धार्मिक प्रवृत्ति चले। जीवन के स्थान में भी धर्म हो। धर्म एक कल्याण का मार्ग है। सबमें अच्छी भावना रहे।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के संकल्प समझाकर स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए। सम्यक्त्व-दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि महापुरुषों का प्रवचन जनता के हित के लिए होता है, उसे जीवन में उतारने का प्रयास करें।

आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में स्थानीय सरपंच केदार गुर्जर ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति देने के साथ ही संपूर्ण भगवतगढ़ समाज की ओर से आचार्यश्री के श्रीचरणों में अभिनंदन-पत्र समर्पित किया तो आचार्यश्री ने मंगल आशीष प्रदान की। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नेमीचंद जैन, मंत्री महेंद्र जैन, पूर्व विधायक मोतीलाल मीणा, ओम जैन, रामेश्वर जैन, अर्पित जैन, रितेश गोयल, मंगल जैन व उक्त विद्या मंदिर के संरक्षक बद्रीलाल शर्मा ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मंडल और कन्या मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। डॉ० वैभव जैन ने भी गीत का संगान किया।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने थोड़े समय बाद ही भगवतगढ़ से सांन्ध्यकालीन विहार के लिए गतिमान हो चले। सूर्य धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर गतिमान था। आचार्यश्री लगभग छह किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर गिरधरपुरा गाँव स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। विद्यालय के शिक्षकों आदि के द्वारा आचार्यश्री का स्वागत किया गया। आचार्यश्री का रात्रिप्रवास इसी विद्यालय में हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि भगवान के पधारने से भगवतगढ़ के सभी जैन-अजैन भगतों के दिल खुल गए हैं।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति उद्गार

तेरापंथ संघ है विशाल

● **साध्वी सुषमा कुमारी** ●

तेरापंथ संघ है विशाल, पाने वाला हो जाता निहाल
साध्वी चंद्रिका ने पाई, महाप्रज्ञ हाथों संयम की मशाल
हर कार्य सीखने का उत्साह था उनके मन में
तत्त्वज्ञान की समझाने की क्षमता थी कमाल।।

ज्ञान ध्यान स्वाध्याय में तुम रहती थी खुशहाल
सुंदर गायन सुंदर रचना और फुर्तीली थी चाल
परम पूज्य गुरुदेव ने अंतिम उपासना के समय
जीवन भर की आलोचना कर, कर दिया मालोमाल।।

प्रतिदिन प्रभु के आगमन खिल जाता था दरबार
साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी की चरण शरण कृपा थी अनपार
एक दिन महाश्रमणी जी की वैयक्तिक उपासना से
अंतिम आराधना कर मानो खोल दिया मुक्ति द्वार।।

आध्यात्मिक मिलन

सरदारपुरा, जोधपुर।

मुनि तत्त्वरुचि जी व मुनि धर्मेश कुमार जी का पाल रोड स्थित तेरापंथ भवन में आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनि तत्त्वरुचि जी ने सरदारपुरा में चातुर्मास संपन्न किया। जोधपुर क्षेत्र में धर्मचर्चा हेतु विचरण कर रहे हैं। मुनि धर्मेश कुमार जी ने गत चातुर्मास जसोल में संपन्न किया, जो गुरुदर्शन हेतु लाडनूं की ओर पधार रहे हैं। सभी चारित्रात्माएँ लाडनूं पधारकर आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन करेंगे। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित हो दर्शन सेवा का लाभ लिया।

मुनि तत्त्वरुचि जी, साध्वी पुण्यप्रभा जी व मुनि धर्मेश कुमार जी के अलावा साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी मंजुयशा जी आदि का प्रवास व विहार जोधपुर व आसपास के क्षेत्रों में हो रहा है। सभी चारित्रात्माएँ अपने क्षेत्र में विहार संपन्न कर लाडनूं की ओर पधार रहे हैं।

इस अवसर पर मुनि धर्मेश कुमार जी, मुनि विनोद कुमार जी व मुनि यशवंत कुमार जी का स्वागत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें समाज के गणमान्य सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।

✦ *एक-एक घंटा त्याग-संयम में व्यतीत हो, यह भी जीवन को सफल बनाने का एक तरीका है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

अनेकांत कार्यशाला का आयोजन

राजलदेसर।

अभातेममं के निर्देशानुसार अनेकांत कार्यशाला-रूपांतरण 'Make your life happy through अनेकांतवाद' श्री रूपांतरण एक्सप्रेस का आयोजन महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में किया गया। नमस्कार महामंत्र के द्वारा शुरू हुए कार्यक्रम में कन्या मंडल की दीपिका रांका, रिया कुंडलिया, प्रज्ञा कुंडलिया एवं नेहा बैद ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा की तरफ से अशोक बैद ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर डॉ० सध्वी परमयशा जी ने कहा कि भगवान महावीर आध्यात्मिक वैज्ञानिक धर्म के महान प्रवक्ता थे। भगवान की वाणी का हर बोल आज भी प्रासंगिक है। अनेकांत कार्यशाला में साध्वी विनम्रयशा जी ने स्वस्थ एवं सुखी परिवार क्या होता है? स्वस्थ एवं सुखी परिवार कैसे बन सकता है के बारे में मोनोग्राम के माध्यम से बताया।

दूसरे चरण में महिला मंडल ने ग्यारह आचार्यों पर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने तथा भिक्षु भजन मंडली के शांतिलाल बैद, कमल सिंह दुगड़ एवं विमल सिंह छलानी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

तीसरे चरण में महिला मंडल द्वारा अनेकांत एक्सप्रेस ट्रेन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें ११ कोच के माध्यम से स्याद्वाद, समानता, सौहार्द, समन्वय, 'सह-अस्तित्व, सद्‌भावना, सहिष्णुता, सकारात्मकता, सत्य सौंदर्य, शांत सहवास एवं संस्कार-संस्कृति के ११ संदेश दिए गए।

महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा जब्बर देवी बैद ने जैन विधि से ट्रेन का स्वागत करते हुए ट्रेन के ड्राइवर का तिलकार्चन किया। इस प्रस्तुति में पुष्पा देवी सोनी, रेखा देवी बेगवानी, इंदु बुच्चा, ममता कुंडलिया, प्रेम देवी विनायकिया सहित महिला मंडल की अनेक महिलाओं की सहभागिता रही। इस अवसर पर डॉ० साध्वी परमययशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने अनेकांत कार्यशाला पर सामुहिक गीत का संगान किया।

तेममं की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया द्वारा आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सविता बच्छावत ने किया। विमल सिंह छल्लानी द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को उपहार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए तेरापंथी सभा की तरफ से प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उनका सम्मान किया गया।

रूपांतरण की शिल्पशाला कार्यशाला

हासन (कर्नाटक)।

अभातेममं के निर्देशन में हासन द्वारा रूपांतरण Through Jainism के विषय-अनेकांत और कषाय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। मंगलाचरण महिला मंडल की गीतिका के द्वारा हुआ। मंडल अध्यक्ष संगीता कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए अनेकांतवाद पर कहा कि अपनी बात को स्वयं की दृष्टि से सही मानते हुए अन्य व्यक्ति की बात को उसी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करना अनेकांतवाद है। निकिता कोठारी ने कषाय पर अपने विचार रखे। सूरज तातेड़ ने अनेकांत को उजागर करने वाला स्यादवाद के बारे में बताया।

मंत्री विनीता सुराणा ने नारी लोक वाचन करते हुए साध्वीप्रमुखाश्री के ५०वें मनोनयन अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में संकल्प यात्रा की जानकारी दी। ज्योति वैद मूथा, सीमा तातेड़, संतोष भंसाली, दीपिका गादिया ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

उमा तातेड़ ने सभी बहनों का आभार ज्ञापन करते हुए अनेकांत पर विचार रखे। ललिता सुराणा ने बीच-बीच में अनेकांत और कषाय पर अपने विचार रखते हुए संचालन किया।

कषाय नियंत्रण से जीवन में रूपांतरण

कुन्नूर।

तेममं द्वारा आयोजित 'कषाय नियंत्रण से जीवन का रूपांतरण' कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हीरे और मोतियों से विशिष्ट है अपनी आत्मा की सुरक्षा करना। कषाय आत्मा के आँगन को गंदा और अशांत बना देता है। अध्यात्म का महत्त्वपूर्ण बिंदु है अपने क्रोध, मान, माया और लोभ को कमजोर बनाएँ।

साध्वीश्री जी ने कहा कि अपने आवेग और आवेश को कंट्रोल करने का प्रयत्न करना चाहिए। कार्यशाला मात्र आयोजन नहीं, सत्य संकल्पों की प्रयोगशाला है। मात्र उपासना नहीं आचरणात्मक पक्ष को मजबूत बनाने की कोशिश करें, यह काम्य है। कार्यशाला का प्रारंभ महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा शीतल बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। एवं स्वागत भाषण दिया। मंडल की पूर्व अध्यक्षा सरला बरड़िया ने कहा कि साध्वीश्री जी द्वारा प्राप्त प्रेरणाओं को हम जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा—हमारे नकारात्मक चिंतन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए निरंतर सकारात्मक भावों का विकास होता रहे। ऊर्जा का सम्यक् उपयोग होता रहे।

कोयंबटूर से समागत तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रेम सुराणा ने कहा कि साधु-संतों का सान्निध्य बड़े सौभाग्य से प्राप्त होता है। उन्होंने प्रसंगवश साध्वीश्री जी को कोयंबटूर पधारने की अर्ज की। महिला मंडल की मंत्री प्रियंका पारख ने आभार जताया।

समृद्ध राष्ट्र परियोजना

विजयनगर।

अभातेममं के निर्देशन में 'समृद्ध राष्ट्र परियोजना' के अंतर्गत तेममं की बहनें मागड़ी रोड स्थित गांधी वृद्धाश्रम पहुँची। मंडल की बहनों ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आश्रम में लगभग ८५ वृद्ध महिलाएँ और पुरुष हैं, उनको मंडल की तरफ से गुड़, चावल, कंबल, दवाइयाँ, दैनिक उपयोग में आने वाली सामग्री एवं अन्य सामग्री वितरित की गई। संघरक्षिका मधु सेठिया, लीला डागा, अध्यक्षा प्रेम भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया, कोषाध्यक्ष मंजु भंसाली, सहमंत्री अंजु सेठिया, सुनीता पींचा, अनीता जीरावला, उषा पींचा आदि कई बहनें उपस्थित थीं।

आश्रम की ओर से तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर के प्रति आभार ज्ञापन किया गया व कार्य की सराहना की गई।

अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन

पर्वत पाटिया।

स्वस्थ परिवार-स्वस्थ समाज योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल एवं टीपीएफ के संयुक्त तत्त्वावधान में एक अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा संरक्षिका सरला कोठारी, परामर्शक पुष्पा पुगलिया, पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी के द्वारा किया गया। प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण, पर्वत पाटिया महिला मंडल ने किया। स्वागत वक्तव्य महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख ने दिया एवं टीपीएफ अध्यक्ष को बधाई एवं आभार ज्ञापित किया।

टीपीएफ के अध्यक्ष भारती छाजेड़ ने टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में बताते हुए सभी का हार्दिक स्वागत किया एवं टीपीएफ द्वारा की जा रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा प्रबुद्ध महिला वर्ग को टीपीएफ से जुड़ने का आह्वान किया। टीपीएफ उपाध्यक्ष सुमन सुखानी ने डॉक्टर रेशमा का परिचय दिया। तत्पश्चात डॉ० रेश्मा ने बहनों को महामारी से संबंधित जानकारियाँ दी। उन्होंने कहा कि हमें ४० साल की उम्र के पश्चात अपने शरीर का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अंत में बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान डॉ० रेशमा ने किया।

कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्षा कुसुम बोथरा ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री चेष्टा कदम वालिया ने किया। डॉक्टर रेशमा का सम्मान साहित्य एवं जैन प्रतीक से किया गया। टीपीएफ अध्यक्षा भारती छाजेड़ व सुमन सुखाणी का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

कषाय भव भ्रमण का कारण है

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा मुनि डॉ० रजनीश कुमार जी के सान्निध्य में रूपांतरण एक्सप्रेस के शक्ति स्टेशन पर कषाय कार्यशाला का आयोजन किया। नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का आगाज किया गया और मंगलाचरण प्रेरणा गीत से हुआ।

मुनि डॉ० रजनीश कुमार जी ने कहा कि कषाय भव भ्रमण का कारण है। उसके हेतु है ४ कषाय–क्रोध, मान, माया व लोभ। इन कषायों से व्यक्ति जीवन में विवेक का, विनय का, मृदुता का एवं ऋजुता का नाश होता है। तिर्यंच गति के बंधन का एक कारण है। इन कषाय पर विजय पाने के लिए मुनिश्री ने उपाय भी बताए।

इस कार्यशाला में बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही। संचालन व आभार ज्ञापन पूर्व मंत्री ललिता मेहता ने किया।

रूपांतरण थ्रू जैनिज़्म कषाय कार्यशाला

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार, तेममं के तत्त्वावधान में रूपांतरण थ्रू जैनिज़्म के विषय 'कषाय' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी काव्यलता जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। मंगलाचरण का संगान मंडल की बहनों द्वारा किया गया। मंडल अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया।

सर्वप्रथम साध्वी काव्यलता जी द्वारा बहनों को कषाय पर प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्होंने कहा कि कषाय वह शत्रु है, जो आत्मा को मलीन करता है। राग-द्वेष हमारे कषाय को बढ़ाते हैं, यदि हमारे भीतर का राग-द्वेष नहीं हो तो कषाय की मंदता स्वतः हो जाती है। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि चारों कषाय पुनर्जन्म का भिक्ष हैं। राग-द्वेष का परित्याग करके ही वीतरागता प्राप्त होती है। जीवन में हमारा लक्ष्य वीतराग को प्राप्त करना ही है। इस कला से पारंगत होने वाला व्यक्ति सकारात्मक चिंतन वाला व्यक्ति बन जाता है। हमें दुर्व्यवहार वाले के साथ भी सद्व्यवहार करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन सुशील मोदी द्वारा किया गया। आभार उपाध्यक्ष सरला मेहता द्वारा किया गया। बहनों की कार्यशाला में बहुत अच्छी उपस्थिति रही। प्रमुखश्री जी के अमृत मनोनयन दिवस पर ५१ संकल्प सीमा नाहर ने बहनों को दिए। जिन्हें सभी ने करने का संकल्प लिया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2021-23

✱ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✱ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✱ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✱ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✱ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✱ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✱ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✱ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✱ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✱ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

आध्यात्मिक मिलन समारोह

बैंगलोर।

बैंगलुरु शहर में श्रावकों की सार-संभाल करते हुए शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी का आध्यात्मिक मिलन साध्वी प्रमिला कुमारी जी के साथ बड़े उत्साह के साथ हुआ।

राजराजेश्वरी नगर चातुर्मास संपन्न करने के पश्चात साध्वी शासनश्री कंचनप्रभा जी उपनगरों में सार-संभाल करते हुए मैसूर रोड चामराजपेट में स्थित बबीता पवन चोपड़ा के निवास स्थान पर पहुँचे। इसी क्रम में साध्वी प्रमिला कुमारी जी चामराजपेट में पारसमल डोसी के निवास से पदार्पण होकर साध्वीश्री के सम्मुख पहुँचकर आध्यात्मिक मिलन हुआ। सभी साध्वीवृंद ने एक-दूसरे को अभिनंदन एवं स्वागत से अपनी भावना प्रेषित की व आपस में खमतखामणा किया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ एक नंदनवन है, यहाँ प्रत्येक साधु-संत इस नंदनवन के खिलते हुए वृक्ष की तरह हैं यह सभी भिक्षु शासन की कृपा है, छोटी बहन बड़ी बहन से मिलने आते हैं यह तेरापंथ धर्मसंघ की धरोहर है। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

दोनों सिंघाड़ों ने स्वागत गीत के माध्यम से एक-दूसरे के प्रति अभिवंदना की। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी एवं साध्वी आस्थाश्री जी ने गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजेश चावत, उपाध्यक्ष महेंद्र टेबा, संगठन मंत्री मनोहर बोहरा, तेरापंथ युवक परिषद, हनुमंतनगर अध्यक्ष धर्मेश कोठारी, सज्जन राज पितलिया, रूपचंद देसरला, संघ संवाद से जितेंद्र घोषल, तेयुप राजाराजेश्वरी नगर से हिमांशु बोथरा आदि अनेक श्रावक उपस्थित थे।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरदारपुरा, जोधपुर।

मुनि तत्त्वरुचि जी, मुनि स्वास्तिक कुमार जी व साध्वी पुण्यप्रभा जी का पाल रोड स्थित तेरापंथ भवन में आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनि तत्त्वरुचि जी ने सन् २०२१ का चातुर्मास तातेड़ गेस्ट हाउस, सरदारपुरा व साध्वी पुण्यप्रभा जी ने अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन में चातुर्मास संपन्न किया। आप दोनों ही जोधपुर के क्षेत्रों में धर्मचर्चा हेतु विचरण कर रहे हैं। मुनि स्वास्तिक कुमार जी ने गत चातुर्मास बाडमेर में संपन्न किया जो गुरु दर्शन हेतु लाडनूं की ओर पधार रहे हैं। सभी चारित्रात्माएँ जनवरी, २०२२ लाडनूं पधारकर आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन करेंगे।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित हो दर्शन सेवा का लाभ लिया।

चारित्रात्माओं का आगमन व प्रवास

मुनि तत्त्वरुचि जी, साध्वी पुण्यप्रभा जी व मुनि स्वास्तिक कुमार जी के अलावा मुनि धर्मेश कुमार जी, साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी मंजुयशा जी का प्रवास व विहार जोधपुर व आसपास के क्षेत्रों में हो रहा है। सभी चारित्रात्माएँ अपने क्षेत्र में विहार संपन्न कर लाडनूं की ओर पधार रहे हैं।

तेयुप, सरदारपुरा सेवा कार्यों द्वारा अपनी महनीय छाप छोड़ रही है। रक्तदान, नेत्रदान, एसडीपी डोनेशन, व्यक्तित्व विकास, पर्यावरण संरक्षण, जैन संस्कार, रास्ते की सेवा आदि-आदि कार्यों में तेयुप अपना योगदान कर रही है।

नुक्कड़ नाटक का मंचन

कोटा।

वर्तमान समय में पूरा देश कई प्रकार के मादक द्रव्यों के सेवन से ग्रस्त है, ऐसे समय में आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा के अंतर्गत नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति के आयाम में से एक नशामुक्ति पर अणुव्रत समिति कोटा के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा कोटा के विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटक का मंचन किया और नशा मुक्त संकल्प प्रपत्र भी भरवाए।

नुक्कड़ नाटक में ज्यादातर तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के बच्चों ने भाग लिया। कोटा में सात जगह नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति हुई, जिसके द्वारा जनमानस में नशे के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होकर नशामुक्ति की दिशा में सार्थक कदम उठाने को लोग प्रेरित हो रहे हैं। इसी संदर्भ में तेयुप, कोटा ने १६१५ नशामुक्ति संकल्प प्रपत्र भी भरवाए।

आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अहिंसा यात्रा के अंतर्गत लगभग २०००० किलोमीटर की यात्रा कर चुके हैं, यह यात्रा ३ देशों से होकर गुजरी है—भारत, नेपाल और भूटान। अहिंसा यात्रा अब परिपूर्णता की ओर जा रही है और इस परिपूर्णता की दृष्टि से भी देखें तो हम कोटावासियों को अहिंसा यात्रा का समविभागी बनने का मौका मिला। आचार्यश्री का २-३ दिसंबर को कोटा में प्रवास था तथा उनके इस प्रवास को सफल बनाने की कोशिश में नशामुक्ति का संदेश कुछ नए तरीके से जन-जन में पहुँचाने की कोशिश की।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

पाणिग्रहण संस्कार

दिल्ली।

मोमासर निवासी एवं दिल्ली प्रवासी गुमानमल सेठिया की पुत्रवधू (मानित पुत्री) सविता का पाणिग्रहण संस्कार सरदारशहर के स्व० कमल कुमार धीया के सुपुत्र जगत सिंह के साथ जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुणेचा और सह-संस्कारक राजीव दुगड़ ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि से संपन्न करवाया।

संस्कारकों एवं पारिवारिकजनों का आभार धीया, जम्मड़ और सेठिया परिवार ने किया। इस अवसर पर अभातेयुप टीम से संदीप डागा-कोलकाता, विकास बोथरा-सरदारशहर, सुमित सेठिया-बीरगंज-नेपाल एवं तेरापंथी सभा-सरदारशहर उपाध्यक्ष राजीव दुगड़, सहमंत्री वर्धमान सेठिया आदि उपस्थित रहे।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

सरदारशहर निवासी, दिल्ली प्रवासी सुरेंद्र उर्वशी सिंघी के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, संस्कारक प्रकाश सुराणा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व भावभीनी वंदना की स्तुति से हुई।

तेयुप, दिल्ली के कार्यकर्ता सुरजीत पुगलिया ने तेयुप की तरफ से सिंघी परिवार का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से सिंघी परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

अभिलाश-करुणा बोथरा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से करवाकर मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

संस्कारक राजेंद्र बांठिया व सहयोगी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के उपाध्यक्ष सुनील लुनिया, कार्यसमिति सदस्य पराग सुराणा सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पर्वत पाटिया।

बीकानेर निवासी, सूरत पर्वत पाटिया प्रवासी मांगीलाल बक्शी के सुपुत्र कमल कुमार बक्शी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद कोठारी ने कमल बक्शी को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कमल व उनके पूरे परिवार ने संस्कारक व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

उधना।

भेरूलाल, राजमल, नेमीचंद भलावत के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से मुख्य संस्कारक संजय बोथरा, सह-संस्कारक जसवंत डांगी व अनिल सिंघवी ने संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप के मंत्री गौतम आंचलिया, सह-संस्कार प्रभारी राकेश आंचलिया उपस्थित थे। अध्यक्ष मनीष दक ने परिवार वालों का आभार प्रगट किया।

विवाह संस्कार

अहमदाबाद।

अशोक (सुपुत्र लुणाचंद-पुष्पादेवी बांठिया) का शुभ विवाह खुशबू (सुपुत्री सोहनलाल-मैनादेवी संकलेचा) के साथ जैन संस्कार विधि से करवाया गया।

वरिष्ठ उपासक एवं जैन संस्कार विधि के 'श्री' संस्कारक डालिमचंद नौलखा ने सह-संस्कारक दिनेश बुरड़ एवं जितेंद्र छाजेड़ के साथ मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह विधि को संपादित किया।

बांठिया परिवार एवं संकलेचा परिवार से ओमप्रकाश बांठिया ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेयुप मंत्री कपिल पोखरना, जैन संस्कार विधि संयोजक वीरेंद्र सालेचा एवं कार्यसमिति सदस्य आकाश भंसाली की उपस्थिति रही।

नामकरण संस्कार

ठाणे।

संस्कारक जयंती बरलोटा एवं कमलेश दुगड़ ने विविध समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ नामकरण संस्कार विधि को सानंद संपादित किया। परिषद की ओर से पिता ऋषभ एवं माता तमना को मंगलभावना पत्रक की विशेष भेंट दी गई। मंत्री ललित कोठारी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के अंत में झाबक एवं मेहता परिवार ने परिवार एवं संस्कारकों के प्रति आभार प्रकट किया।

✦ *वर्ष आता है और चला जाता है। व्यक्ति यह चिंतन करे कि आने वाले वर्ष सफल कैसे बनें?*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

अंतर्यात्रा

(क्रमशः) प्रश्न हो सकता है कि चित्त ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर कैसे जाता है? रक्तचाप मापने की मशीन में क्या होता है? पारा नीचे से ऊपर जाता है और ऊपर से नीचे आता है। यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक पारा अपने स्थान से इधर-उधर नहीं होता। पारे की भाँति हमारी प्राण-ऊर्जा भी जब केंद्रीय नाड़ी-संस्थान अर्थात् सुषुम्ना में प्रवाहित रहती है, मस्तिष्क में पहुँच जाती है। किंतु चित्त जब तक बाह्य जगत से नहीं हटता है, पृष्ठरज्जु में केंद्रित नहीं होता, वह ऊर्जा का वाहक नहीं हो सकता।

अंतर्यात्रा अभौतिक ऊर्जा के जागरण हेतु एक विशिष्ट यात्रा है, चेतना के आभ्यंतरीकरण की यात्रा है। इसका दीर्घकालीन अभ्यास साधक को स्वभाव की ओर उन्मुख करता है। और परभाव से पराङ्मुख करता है। जब तक परभाव के प्रति आकर्षण समाप्त नहीं होता, जीवन की दिशा नहीं बदल सकती। इसलिए परभाव का आकर्षण छोड़ना जरूरी है। यह आकर्षण छूटने पर ऊर्जा का प्रवाह अजस्र हो जाता है। उसमें कहीं अवरोध नहीं आता। ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध समाप्त होने का अर्थ है–अध्यात्म का विकास, आनंद का विकास और सहजता का विकास। मानव-मन की यही तो अभीप्सा होती है। इसकी पूर्ति का सीधा-सा उपाय है–अंतर्यात्रा।

ध्यान से अहं-चेतना टूटती है या पुष्ट होती है?

दीर्घश्वास की साधना, चिरकालिक अभ्यास।
साधक को पल-पल रहे, अपना ही आभास।।
जागृत साक्षीभाव में, श्वास स्वयं है मंद।
गति-आगति को देखना, प्रेक्षा का निस्यन्द।।
चलते सोते बैठते, करते काम प्रकाम।
प्रेक्षा केवल श्वास की, याद रहे हर याम।।
मानस की एकाग्रता, तन विकार से दूर।
क्षीण अहं की चेतना, क्रोध लोभ भी चूर।।

प्रश्न : ध्यान करने की इच्छा, अनुकूल वातावरण और ऊपर की पूरी तैयारी के बावजूद साधक का अपना मन उसके हाथ में नहीं रहता। ध्यान-स्थिति में बैठने पर भी मन में संकल्प-विकल्पों का उद्भव होता रहता है। इस मन को कहाँ टिकाया जा सकता है?

उत्तर : मन के दो काम हैं–सोचना और देखना। सोच-विचार संकल्पों को उत्पन्न करते हैं और दर्शन चिंतन को रोकता है। ध्यान-काल में मन से सोचने के स्थान पर देखना शुरू कर दिया जाए तो मन के भटकन की समस्या स्वयं सुलझ सकती है। प्रश्न होगा–मन से किसे देखा जाए? सबसे पहले देखना चाहिए श्वास को। श्वास के सधे बिना आगे गति नहीं हो सकती। क्योंकि अधिकांश व्यक्ति छोटा श्वास लेते हैं। साधना की दृष्टि से दीर्घश्वास का अभ्यास आवश्यक है। श्वास लंबा लेना और छोड़ना–यह प्राणायाम नहीं है। कोरा प्राणायाम ध्यान के लिए न तो जरूरी है और न अच्छा ही है। दीर्घश्वास का प्रयोग और साथ-साथ उसका अनुभव, आते-जाते श्वास का जागरूकता के साथ हर पल अनुभव करना मन को केंद्रित करने का सरलतम और अमोघ उपाय है।

प्रश्न : दीर्घश्वास और प्राणायाम में क्या अंतर है?

उत्तर : केवल दीर्घश्वास और प्राणायाम दो तत्त्व नहीं है। श्वास में जो रेचक, पूरक और कुंभक की स्थिति है, वह प्राणायाम ही है। किंतु चित्त को श्वास पर केंद्रित कर उसके प्रति जागरूक बनना प्राणायाम नहीं, ध्यान है। श्वास की गति-अगति को देखना ध्यान है। केवल प्राणायाम का शारीरिक दृष्टि से कोई उपयोग हो सकता है, पर मानसिक दृष्टि से लाभ नहीं है, जबकि ध्यान से मानसिक विकास की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

दीर्घश्वास के प्रयोग अर्थात गति-आगति के अनुभव से तीन बातें फलित होती हैं–जागरूकता, साक्षीभाव और श्वास की मंदता। साधना के प्रारंभ में इन तीन बातों की अनुभूति साधक के मन में आत्म-विश्वास जगा देती है। अपने प्रति विश्वास जगने का अर्थ है अपनी शक्तियों का बोध और उनके उपयोग की क्षमता। दीर्घश्वास प्रेक्षा का यह प्रथम निस्यन्द है, पहला रसस्राव है, जिसका अनुभव होने के बाद व्यक्ति की दिशा बदल जाती है। वह आत्मकेंद्रित बन जाता है और अपनी पहचान बना लेता है।

श्वास-प्रेक्षा का अभ्यास जैसे-जैसे बढ़ता है, वैसे-वैसे सहज जागरूकता की स्थिति निर्मित हो जाती हैं यह स्थिति दीर्घकालिक बनती है और भावक्रिया का विकास होने लगता है। फिर ठहरते, बैठते, चलते, सोते, काम करते हर क्रिया के साथ श्वास के प्रति जागरूकता बनी रहती है, उसकी सतत स्मृति बनी रहती है। इसमें कुछ करना नहीं पड़ता, केवल साक्षीभाव जगाना होता है। जाग्रत साक्षीभाव अपने प्रति ईमानदारी से सोचने-समझने की दृष्टि देता है और राग-द्वेष की चेतना को दुर्बल बनाता है।

प्रश्न : दीर्घश्वास-प्रेक्षा, जागरूकता या साक्षीभाव का लाभ क्या है?

उत्तर : निरंतर नियमित रूप से निष्ठापूर्वक दीर्घकाल तक श्वास-प्रेक्षा करने से साधक कुछ विशिष्ट प्रकार के लाभों से लाभान्वित होता है। इससे मानसिक एकाग्रता बहुत अच्छी सध जाती है। शारीरिक दृष्टि से बीमारियों को दूर करने में भी इसका उपयोग है। दीर्घश्वास और जागरूकता के योग से मन के विकार भी काफी मात्रा में बाहर निकल जाते हैं। अध्यात्म की दृष्टि से जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण लाभ है, वह है अहं-चेतना की क्षीणता। सामान्यतः हर व्यक्ति में अहं की चेतना होती है, अस्मिता होती है। कुछ ऐसे निमित्तों का योग होता है, जिससे अस्मिता बढ़ती जाती है। एक सीमा के बाद उससे व्यक्तित्व खोखला हो जाता है और भीतर-ही-भीतर व्यक्ति टूटन का अनुभव करता है। वह समझने लगता है कि उसका अहंभाव उसे खा रहा है, फिर भी वह उसको छोड़ नहीं सकता। ऐसी स्थिति में दीर्घश्वास-प्रेक्षा का जागरूकतापूर्वक प्रयोग करने वाला साधक अपनी अहं-चेतना को क्षीण करने में सफल हो जाता है। अहं टूटता है तो उसके साथ क्रोध और लोभ भी समाप्त होने लगते हैं। क्रोध और लोभ ये दोनों ही ऐसे भाव हैं, जो वैयक्तिक और सामूहिक जीवन का संतुलन तोड़ते हैं। ये जब समाप्त होने लगते हैं तो व्यक्ति सहज रूप से शांत बन जाता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(४३)

नए निर्माण की खातिर नया आलोक बरसाओ
नए अरमान दो मन को नई अब राह दिखलाओ।।

बुहारें पंथ जीवन का करें शृंगार शूलों से
लताएँ शुष्क जीवन की भरें खुशहाल फूलों से
नया स्वर दो अगर मन में नया अनुराग जग जाए
तुम्हारे नाम गीतों की अनूठी भीड़ लग जाए
बनाएँ नीड़ आस्था का वही आवास अविनश्वर
समर्पण के सुगम पथ से हमें उस पार पहुँचाओ।।

सुखद सोपान किरणों की सत्य की राह बतलाए
नई हर साँस की गाथा नया इतिहास गढ़ जाए
बुझे क्यों दीप झंझा से सुबह का आगमन निश्चित
अमर उपहार करुणा का तुम्हारा प्राप्त कर उपचित
तोड़ दो राग के बंधन बढ़े वैराग्य का स्यंदन
चपल संसार सपनों का तुम्हीं आधार बन जाओ।।

सुकोमल कांत कलियों पर नहीं हिमपात हो पाए
तरी तूफान से डरकर नहीं मझधार खो जाए
विकल है प्राण वसुधा पर देखकर साँझ की वेला
निशा का कर पराभव तुम लगा दो तेज का मेला
नया दिन आज दीवाली खड़ी है सामने होली
दशहरा ईद सब कुछ है नए मधुमास! मुसकाओ।।

(४४)

दृष्टि तुम देते रहो मुझको अगर तो
बदल दूँगी आज ही पूरा नजारा।
सृष्टि तुम करते रहो पग-पग अगर तो
बदल दूँगी मैं स्वयं संसार सारा।।

स्वप्न के दर पर खड़ी कब से निहारूँ
सत्य से मिलना कभी भी हो न पाया।
कल्पना के पंख से नभ को समेटूँ
किंतु अब तक भी न उसका छोर आया।
शून्य में भी प्राण भर दूँगी अगर तुम
समय पर करते रहो समुचित इशारा।।

जिंदगी की घाटियों में है अरुण फिर
दे निमंत्रण तमस को किसने बुलाया।
लग रही हाटें सुखों की हर दिशा में
व्यर्थ ही क्यों वेदना का गीत गाया।
तिमिर को आलोक मैं करती रहूँगी
आँख में भर दो अगर शाश्वत उजारा।।

(क्रमशः)

संबोधि

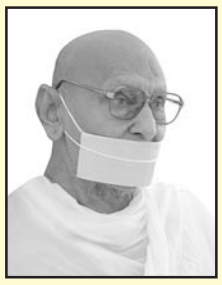

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(३९) कृतध्यानकपाटञ्च, संयमेन सुरक्षितम्।
अध्यात्मदत्तपरिघं, ब्रह्मचर्यमनुत्तरम्।।

ब्रह्मचर्य अनुत्तर धर्म है। संयम-इंद्रिय और मन के निग्रह द्वारा वह सुरक्षित है। उसकी सुरक्षा का कपाट है—ध्यान और उसकी अर्गला है—अध्यात्म।

ब्रह्मचर्य भगवान् है, तपों में उत्तम तप है। ब्रह्मचर्य से देवता अमर बन जाते हैं। अर्थववेद में नेता के लिए ब्रह्मचारी होना आवश्यक माना है।

ऐतरेय उपनिषद् में कहा है—शरीर के समस्त अंगों में जो यह तेजस्विता है वह वीर्य-जन्य ही है। प्रश्नव्याकरणसूत्र में ब्रह्मचर्य का अर्थ बहुत व्यापक किया है। ब्रह्मचर्य उत्तम तप, नियम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सम्यक्त्व और विनय का मूल है। कुंदकुंद कहते हैं—'जो स्त्रियों के सुंदर अंगों को देखते हुए भी विकार नहीं लाते वे ब्रह्मचारी हैं।' महात्मा गांधी कहते हैं—'ब्रह्मचर्य का अर्थ है समस्त इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण और मन, वचन, कृत्य द्वारा लोलुपता से मुक्ति।'

ब्रह्म शब्द की व्युत्पत्ति पर ध्यान देने से ये सारे अर्थ उसी में सन्निहित हो जाते हैं। ब्रह्म का अर्थ है—आत्मा का परमात्मा। उसमें विचरण करने वाला ही वास्तविक ब्रह्मचारी है। जब आत्म-विहार से व्यक्ति बाहर चला जाता है तब न ब्रह्मचर्य सुरक्षित रहता है, न अहिंसा और न ध्यान।

(४०) कृताकम्पमनोभावो, भावनानां विशोधकः।
सम्यक्त्वशुद्धमूलोऽस्ति, धृतिकन्दोऽपरिग्रहः।।

अपरिग्रह से मन की चपलता दूर हो जाती है, भावनाओं का शोधन होता है। उसका शुद्ध मूल है सम्यक्त्व और धैर्य उसका कंद है।

अनैतिकता का मुख्य हेतु है—अर्थ-लिप्सा। भीष्म पितामह ने इसी कटु सत्य को यों सामने रखा है—हे युधिष्टर! तुम्हारा कहना अनुचित नहीं है कि आप धर्म को छोड़ अधर्म की ओर क्यों चले गए? मैं बताऊँ तुम्हें, मनुष्य अर्थ का दास है, किंतु अर्थ किसी का दास नहीं है। अर्थ के प्रलोभन ने ही मुझे कौरवों का पक्षपाती बना दिया। परिग्रह अनर्थ की धुरा है। मानसिक मलिनता को परिग्रह में आसक्त व्यक्ति छोड़ नहीं सकता। सच्चाई यह है कि पवित्रता, स्थैर्य, शुद्धि और धैर्य का निवास अपरिग्रह में है। असंतुष्ट व्यक्ति बार-बार उत्पन्न होता है और मरता है, भले फिर वह इंद्र भी क्यों न हो।

सुख आवश्यकताओं को बढ़ाने में नहीं है। मनुष्य जितना स्व-सीमा में रहता है उतना ही वह सुखी और शांत रहता है। सीमा का अतिक्रमण अशांति को उत्पन्न करता है। परिग्रह स्व नहीं, पर है। वह सहायक है, किंतु सर्वेसर्वा नहीं। वह शरीर की भूख है न कि आत्म-चेतना की। इस विवेक पर चलने वाला उससे चिपका नहीं रहता। न वह शोषण करता है और न अनावश्यक संग्रह। महाभारत में कहा है—

भ्रियते यावज्जठरं, तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत, से स्तेनो दंडमर्हति।।

– जितना पेट भरने के लिए आवश्यक होता है, वही व्यक्ति का अपना है—व्यक्ति को उतना ही संग्रह करना चाहिए। जो इससे ज्यादा संग्रह करता है वह चोर है, दंड का भागी है।

मेघः प्राह

(४१) किं नाम भगवन्! धर्मः कस्मै तस्याऽनिवार्यता।
विद्यते तस्य को लाभः, जिज्ञासाऽसौ निसर्गजा।।

मेघ बोला—भगवन्! धर्म क्या है? उसकी अनिवार्यता क्यों है? उसका लाभ क्या है? यह जिज्ञासा स्वाभाविक है।

भगवान् प्राह

(४२) चैतन्यानुभवो धर्मः सोपानं प्रथमं व्रतम्।
तपसा संयमेनासौ, साध्योऽस्ति सकलैर्जनैः।।

भगवान् ने कहा—धर्म है चैतन्य का अनुभव। उसका प्रथम सोपान है व्रत। उसकी साधना के दो हेतु हैं—तप और संयम।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१६ : चारित्र में शरीर कितने होते हैं?

उत्तर : प्रथम दो चारित्र में औदारिक, तैजस् व कार्मण—ये तीन, वैक्रिय सहित चार व आहारक सहित पाँच शरीर होते हैं। अंतिम तीन में तीन—औदारिक, तैजस् व कार्मण शरीर पाते हैं।

प्रश्न-१७ : चारित्र में लेश्या कितनी होती हैं?

उत्तर : सामायिक, छेदोपस्थापनीय में छह, परिहार विशुद्धि में तीन शुभ तथा सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात में एक शुक्ल लेश्या होती है। परिहार विशुद्धि में तीन शुभ लेश्या उसमें प्रवेश व संपन्नता के समय की अपेक्षा से ली गई है। मध्यवर्ती काल में छह ही लेश्या हो सकती है। यथाख्यात वाले अलेशी भी होते हैं। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य आर्यरक्षित

(क्रमशः) एक बार मुनि सोमदेव श्रमणों के साथ चल रहे थे। आर्यरक्षित के संकेतानुसार मार्गवर्ती बालकों ने कहा—'छत्रधारी के अतिरिक्त सब मुनियों को हम वंदन करते हैं।' सोमदेव मुनि ने इसे अपना अपमान समझा और छत्र धारण करना छोड़ दिया। इसी तरह कौपीन के अतिरिक्त अन्य उपकरण भी छोड़ दिए थे। कौपीन त्याग की चर्चा के प्रसंग पर सोमदेव मुनि ने कहा—

'मुझे तुम वंदन भले न करो और तुम्हारी अर्चा से प्रापणीय स्वर्ग की उपलब्धि भी भले न हो, मैं नग्नतत्त्व को स्वीकार नहीं करूँगा।' पूर्वधर आर्यरक्षित के सामने पिता सोमदेव मुनि के ये शब्द प्राचीन नग्नत्त्व परंपरा के प्रति स्पष्ट विद्रोह का संकेत था।

इस प्रसंग से ज्ञात होता है सोमदेव मुनि ने कौपीन का परित्याग लंबे समय के बाद किया था। सोमदेव मुनि भिक्षा लेने भी नहीं जाते थे। आर्यरक्षित के निर्देशानुसार एक दिन मुनियों ने उन्हें भोजन के लिए निमंत्रण नहीं दिया। सोमदेव मुनि कुपित हुए। पिता की परिचर्या के लिए आर्यरक्षित स्वयं भिक्षाचरी के लिए उठे। सोमदेव मुनि ने आर्यरक्षित से निवेदन किया—आप आचार्य हैं। धर्मसंघ की धुरा के संवाहक हैं। आचार्य गोचरी करें और मैं न करूँ, यह लोक-व्यवहार में उचित नहीं है, अतः आप मुझे आज्ञा प्रदान करें। मैं स्वयं ही गोचरी के लिए जाऊँगा।'

आर्यरक्षित ऐसा ही चाहते थे। वे मौन हो गए। सोमदेव मुनि आर्यरक्षित से आज्ञा प्राप्त कर भिक्षाचरी के लिए चले। एक संपन्न श्रेष्ठी के द्वार पर पहुँचे। घर में पीछे के द्वार से घुसे। सोमदेव मुनि को चोर-पथ से आते देख श्रेष्ठी कुपित हुआ। सोमदेव मुनि बुद्धि के धनी थे, वाक्पटु थे। उन्होंने तत्काल कहा—श्रेष्ठी! लक्ष्मी का आगमन पीछे के द्वार से ही होता है। मधुरवाणी में वातावरण को बदल देने की क्षमता होती है। विवेकपूर्वक बोला गया एक वाक्य भी विष को अमृतमय बना देता है। सोमदेव मुनि के सुमधुर शब्द के प्रयोग से श्रेष्ठी के क्रोध का पारा उतर गया। वह मुनि पर प्रसन्न हुआ। श्रेष्ठी मुनि को भक्ति-भावपूर्वक अपने घर में ले गया और बत्तीस मोदकों का दान दिया। सोमदेव मुनि धर्मस्थान पर आए। मोदकों से भरा पात्र आर्यरक्षित के सामने रख दिया। सोमदेव मुनि का मन अत्यंत प्रसन्न था।

आगम विहित संयम-विधि में सोमदेव मुनि को स्थिर देखकर आर्यरक्षित का मन भी प्रसन्न था। प्रसन्नता के इन क्षणों में आर्यरक्षित से मार्गदर्शन प्राप्त कर सोमदेव मुनि ने अपने हाथ से तत्रस्थ सब मुनियों को मोदक का दान दिया और दान धर्म का महान् लाभ प्राप्त किया।

आचार्य आर्यरक्षित का युगप्रधानत्व—काल वी०नि० ५८४ (वि० ११४, ई० सन् ५७) से प्रारंभ होता है। आर्यरक्षित का युग विचारों का संक्रमण काल था। वह नई करवट ले रहा था। पुरातन परंपराओं के प्रति जनमानस में आस्थाएँ डगमगा रही थीं।

आर्यरक्षित स्थितिपालक नहीं थे। वे स्वस्थ परंपरा के पोषक थे। क्रांतिकारी विचारों के वे सबल समर्थक भी थे। चातुर्मास की स्थिति में दो पात्र रखने की प्रवृत्ति स्वीकार कर नई परंपरा को जन्म देने का साहस उन्होंने किया था। उनके शासनकाल में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य अनुयोग व्यवस्था का हुआ। आगम-वाचना का यह विशिष्ट अंग है। उससे पहले आगमों का अध्ययन समग्र नयों एवं चारों अनुयोगों के साथ होता था। अध्ययन क्रम की यह जटिल व्यवस्था थी। अस्थिरमति शिष्यों का धैर्य डगमगा जाता था। आर्यरक्षित के युग में अध्ययन की नई व्यवस्था प्रारंभ हुई। इसके मुख्य हेतु विन्ध्य मुनि बने थे। विन्ध्य मुनि प्रतिभा संपन्न, शीघ्रग्राही मनीषा के धनी थे। आर्यरक्षित द्वारा प्रदत्त आगम-वाचना को विन्ध्य मुनि तत्काल ग्रहण कर लेते थे। उनके पास अग्रिम अध्ययन के लिए बहुत-सा समय अवशिष्ट रह जाता था। आर्यरक्षित से विन्ध्य मुनि ने प्रार्थना की, मेरे लिए अध्ययन की व्यवस्था पृथक् रूप से करने की कृपा करें। आर्यरक्षित ने इस महनीय कार्य के लिए महामेधावी दुर्बलिका पुष्यमित्र को नियुक्त किया। कुछ समय बाद अध्यापनरत दुर्बलिका पुष्यमित्र ने आर्यरक्षित से निवेदन किया—'आर्य विन्ध्य को आगम-वाचना देने से मेरे पठित पाठ के पुनरावर्तन में बाधा पहुँचती है। इस प्रकार की व्यवस्था से मेरी अधीत पूर्व ज्ञान की राशि विस्मृत हो जाएगी।'

शिष्य दुर्बलिका पुष्यमित्र के इस निवेदन पर आर्यरक्षित ने सोचा—महामेधावी शिष्य की यह स्थिति है। आगम-वाचना प्रदान करने मात्र से अधीत ज्ञानराशि के विस्मरण की संभावना बन रही है। ऐसी स्थिति में आगम ज्ञान को सुरक्षित रखना बहुत कठिन है। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 दिसंबर, 21 - 2 जनवरी, 22

✦ *आदमी गुणों के आधार पर साधु और अवगुणों के आधार पर असाधु बन जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आध्यात्मिक मिलन के आयोजन

दिल्ली

बहुश्रुत परिषद की सम्मानित सदस्य साध्वी कनकश्री जी एवं शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी का दिल्ली चातुर्मास परिसंपन्नता के पश्चात लाडनूं की ओर विहार क्रम में हिसार पदार्पण हुआ। आप दोनों का तेरापंथ भवन, हिसार में विराजित शासनश्री साध्वी यशोधरा जी, तुलसी उपसेवा केंद्र में विराजित मौन साधिका रत्नाधिक साध्वी राजकुमारी जी एवं सेवाएँ दे रही साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के साथ मंगल आध्यात्मिक मिलन हुआ।

कुल २३ साध्वियों (५ सिंघाड़ों) का मंगल मिलन व रत्नाधिक साध्वीद्वय की दीक्षा की हीरक जयंती की आध्यात्मिक मंगल भावना की बेला के साक्षी बने—दक्षिण दिल्ली सभा के परामर्शक एवं महासभा उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया की अगुवाई में दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, निवर्तमान अध्यक्ष, दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्ष व अन्य श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी का विगत वर्ष एवं शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी का इस वर्ष चातुर्मास गोयल आस्था भवन, ग्रीन पार्क, दक्षिण दिल्ली में संपन्न हुआ। धर्मसंघ और आचार्यश्री के प्रति अनंत कृतज्ञता।

विजयनगर

अभातेयुप द्वारा निर्देशित परिषद के साथियों की सार-संभाल के अंतर्गत तेयुप द्वारा संगठन यात्रा का आगाज साध्वी लावण्यश्री जी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में किया गया।

तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि परिषद के हर युवा साथियों की सार-संभाल करेंगे। ज्यादा से ज्यादा युवाओं को परिषद की गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए नए सदस्यों को परिषद से सक्रिय रूप से जोड़ने का लक्ष्य रखा है।

इस अवसर पर प्रमिला कुमारी जी ने बताया कि संगठन में शक्ति होती है, संगठित होकर हम बड़े से बड़े लक्ष्य को सरलता से हासिल कर सकते हैं। मंत्री विकास बांठिया ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए अभातेयुप प्रकाशन युवादृष्टि को हर घर पहुँचाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर महासभा सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, अभातेयुप परिवार से नवनीत मूथा, गौतम खाब्या, गांधीनगर सभा अध्यक्ष सुरेश दक, विजयनगर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, सहमंत्री प्रकाश गांधी, तेयुप से पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, संगठन मंत्री दीपक भूरा, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम बाई भंसाली एवं कई गणमान्य श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

गांधीनगर

कुमारी जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक ऐसा नंदनवन है, जिसमें हम अभी निश्चिंत हैं, क्योंकि हमारे गण सरताज की हम सब पर विशेष कृपा रहती है। आज हम दोनों सिंघाड़ों का मिलन हुआ, काफी लंबे समय से इसकी प्रतीक्षा थी। साधुओं का मिलन सौहार्द व समन्वय का प्रतीक है, श्रावक समाज भी इसकी सीख लें। परिवारों में सौहार्द व समन्वय बना रहे।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि मुझे भक्ति करने का अवसर मिला। रत्नाधिक से मिलकर अनुभवों का लाभ मिलता है, मुझे और सभी सहवर्तिनी साध्वियों को अवश्य आपश्री कुछ अनुभव प्रदान कराएँ।

साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से साध्वीवृंदों के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की। साध्वी आस्थाश्री जी, साध्वी धैर्यप्रभा जी, साध्वी विज्ञप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से साध्वी लावण्यश्री जी के प्रति अभिनंदन भावों की प्रस्तुति दी।

तेरापंथी महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ सभा बैंगलोर मंत्री नवनीत मूथा, विजयनगर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, महिला मंडल गांधीनगर से स्वर्णमाला पोखरना, विजयनगर से प्रेम बाई भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए।

डोसी परिवार की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया व दीक्षित डोसी ने सबका स्वागत किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, बैंगलोर अध्यक्ष सुरेश दक, सहमंत्री राजेंद्र बैद, टीपीएफ से माणक बलडोटा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित रहा। संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

कषाय मुक्ति कार्यशाला का आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

तेरापंथ भवन में मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कोरोना वायरस से बचने हेतु दीर्घ श्वास के प्रयोग को अचूक उपाय बताया। आपने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता, महान दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने चिंतन से बहुत पहले ही संकेत कर दिया कि दुनिया में ऐसे वायरस तैयार किए जा रहे हैं, जिससे महामारी जैसी बीमारी विश्व में फैल जाएगी।

यही बात मुनिश्री ने अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा समायोजित कषाय मुक्ति कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान प्रणाली का एक प्रयोग है—दीर्घ श्वास। उन्होंने बताया कि दीर्घ श्वास दीर्घ जीवन का आधार है, इससे न केवल शरीर में ऑक्सीजन की कमी दूर होती है, अपितु शरीर बीमारी से लड़ने में भी सक्षम बनता है। मुनि संभव कुमार जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यशाला में तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने कार्यशाला की महत्ता एवं विषय पर विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष चंद्रा कोठारी ने नारीलोक पत्रिका का वाचन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में तेममं की संगठन मंत्री दिलखुश तातेड़ और प्रचार-प्रसार मंत्री चेतना घोड़ावत ने मंगल गीत का संगान एवं महिला मंडल मंत्री चंद्रा जीरावला ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम में मंडल की पूर्व अध्यक्षा विमला बैद ने अपने विचार व्यक्त किए, वहीं पूर्व मंत्री अमिता बैद ने गीत का संगान किया।

बने सहारा फैलाएँ उजियारा

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के निर्देशन में पर्वत पाटिया महिला मंडल के तत्त्वावधान में कन्या मंडल ने 'बने सहारा फैलाएँ उजियारा' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी गंग ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा करवाई। स्वागत वक्तव्य महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख ने सभी आश्रम की कन्याओं का भावभीना स्वागत किया। अनाथ आश्रम की गर्ल्स को निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम बोथरा द्वारा स्वच्छता पर प्रशिक्षण दिया गया।

गर्ल्स को पेंसिल किट, चॉकलेट कैंडी, मास्क, नोटबुक आदि वितरित किए गए। कार्यक्रम का समापन कन्या मंडल प्रभारी चंद्रकला कोठारी द्वारा आभार ज्ञापन से हुआ। कार्यक्रम में कन्या मंडल संयोजिका मुस्कान सिंघवी, सह-संयोजिका स्नेहा छाजेड़ एवं कन्या मंडल की पूरी टीम का पूर्ण सहयोग मिला। कार्यक्रम सफल रहा। अनाथ आश्रम की टीचर ने महिला मंडल के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की एवं आगे भी इस तरह के कार्यक्रम करने के लिए कहा एवं आभार प्रकट किया। कन्याओं और महिलाओं की अच्छी उपस्थिति रही। इसमें आश्रम की ३६ कन्याओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम रोचक एवं सफल रहा। आश्रम की टीचर्स का सहयोग प्राप्त हुआ।

डॉ० केडी शेंडगे इंग्लिश मीडियम स्कूल में विशेष कार्यक्रम

महाराष्ट्र।

साध्वी निर्वाणश्री जी महाराष्ट्र के गाँव-गाँव, नगर-नगर पदयात्रा करती हुई अग्रिम मंजिल की ओर गतिमान हैं। उमरगा में साध्वीश्री जी के आगमन पर सरपंच वैंकट राव पाटिल, आशा मंगल कार्यालय के मालिक नंदकुमार मुक्कावर एवं सामाजिक कार्यकर्ता बाबूराव पाटिल ने साध्वीश्री जी से विशेष संबोध प्राप्त किया। साध्वीश्री जी ने उन्हें विशेषतः स्वस्थ जीवनशैली का प्रशिक्षण देते हुए जीवनोपयोगी बातें बताईं।

साध्वी कुंदनयशा जी ने मधुर गीत का संगान किया। नंदकुमार के पुत्र सागर मुक्कावर एवं भूषण मुक्कावर ने अपनी पत्नी व बच्चों के साथ उपासना का लाभ लिया। इस यात्राक्रम के अगला पड़ाव डॉ० केडी शेंडगे इंग्लिश मीडियम स्कूल था, जहाँ गत वर्ष पूज्य गुरुदेव एवं धर्मसंघ का चार दिवसीय प्रवास हुआ, अब साध्वीश्री जी का शुभागमन हुआ।

साध्वीश्री जी के पावन प्रवेश पर स्वयं प्राचार्य शिवनेचेरी एम०एस० ने साध्वीवृंद का भावभरा स्वागत किया। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने विद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थीगण को संबोधित करते हुए कहा कि विद्या का मुख्य लक्ष्य अज्ञान-अंधकार को दूर कर ज्ञान का उजाला पाना है। साध्वीश्री जी ने बच्चों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग सिखाते हुए 'सिद्धा' मंत्र का प्रयोग सिखाया। इस अवसर पर सभी बच्चों ने आधा घंटे से अधिक मोबाइल व टीवी न देखने का संकल्प ग्रहण किया।

अध्यापक वाई एस वाघमोडे ने साध्वीश्रीजी के प्रति आभार प्रकट करते हुए उनके बताए गए सूत्रों को पालन करने की इच्छा जाहिर की। इस अवसर पर करीब सौ बालकों सहित प्राचार्य शिवनेचेरी, वाघमोड़े, मनोज कुलकर्णी, प्रियंका बालसुरे, एस०ए० हावले, पी०एस० चुंगे, दीपाली बालसूरे, ए०वी० पोद्दार आदि शिक्षक कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आस्था का समुंद्रर बहता रहे

हैदराबाद।

साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी काव्यलता जी ने अपने सहवर्तनी साध्वी स्वस्थप्रभा जी, साध्वी भावयशा जी, साध्वी सहजयशा जी, साध्वी मल्लीप्रभा जी, साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी के साथ चातुर्मास सुसंपन्न कर आईडीपीएल क्षेत्र, हैदराबाद से अपने आगामी गंतव्य की ओर विशाल जन-सैलाब के साक्ष्य में विहार किया। विहार से पूर्व साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा—जहाँ आस्था, समर्पण, श्रद्धा का समंदर बहता है, वहाँ भगवान भी भक्तों के वश में हो जाते हैं।

आईडीपीएल की सड़कों पर उमड़ती श्रावक-श्राविकाओं की भक्ति में श्रद्धा का बल था। यहाँ के श्रावकों ने साधु-संतों के प्रति अपनी विशेष भक्ति दिखाई है। नवरत्न अमिता महनोत ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद के बढ़ते कदमों के साथ सिकंदराबाद तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिड़िया, उपाध्यक्ष सरला मेहता, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, तेयुप पूर्व अध्यक्ष श्रवण कोठारी सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

विवेकानंद नगर, रीक्रिएशन, कुकटपल्ली पहुँचकर साध्वी मधुस्मिता जी ने एवं साध्वी काव्यलता जी ने सेवा देने वाले एक-एक व्यक्ति का नाम जोड़कर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वीवृंद का वात्सल्य भाव, ममता, विनय अपने श्रावकों पर अटूट था।

मानव मात्र में नैतिक उत्थान का एक घटक है - अणुव्रत

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में संगठन गोष्ठी रखी गई, जिसमें अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा मुख्य अतिथि थे। आपने अणुव्रत के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अणुव्रत समिति, हैदराबाद अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में काफी सक्रियता से कार्य कर रही है व यही सक्रियता निरंतर बनी रहे। यहाँ के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता ऊर्जावान हैं व समर्पण भाव से कार्य कर रहे हैं। आपने आगे कहा कि अणुव्रत के कार्यकर्ताओं को अपने अणुव्रती होने पर गर्व होना चाहिए। हमें कार्यक्रमों की ऐसी मिसाल प्रस्तुत करनी चाहिए कि अन्य लोग स्वयं अणुव्रत के प्रति आकर्षित हों।

आपने अणुव्रत को व्यापकता देने के लिए अणुविभा द्वारा संपादित कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्कूली विद्यार्थियों में जीवन विज्ञान को व्यापकता देने के साथ अणुव्रत क्रिएटिविटी प्रतियोगिता का आयोजन कर विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभाओं को उजागर करना भी है।

अणुव्रत समिति, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने अपने स्वागत वक्तव्य में भीखमचंद सुराणा व अन्य पदाधिकारियों का स्वागत व अभिनंदन किया। इसके साथ ही समिति द्वारा विगत ६ माह में किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। मंत्री अशोक मेड़तवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर भीखमचंद सुराणा का अणुव्रत समिति की ओर से सम्मान किया गया। इस अवसर पर अणुविभा तेलंगाना प्रभारी तिलोक सिपानी, अणुविभा कार्यकारिणी सदस्य विकास दस्सानी, जयंती गोलछा सुराणा के साथ अणुव्रत समिति, हैदराबाद के सहंत्री विजय आंचलिया, कार्यकारिणी सदस्य राकेश सुराणा, हुक्मीचंद कोचेटा व कमल बरमेचा आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह-२०२१ का आयोजन

बैंगलोर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में वर्धमान भवन, चामराजपेट में टीपीएफ, बैंगलोर द्वारा मेधावी सम्मान समारोह-२०२१ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी कंचनप्रभा जी ने मेधावी छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में अच्छी डिग्री के साथ में अनुशासन, संयम, सौहार्द और देव-गुरु तथा धर्म में आस्था बनाकर रखें। सभी छात्र-छात्राओं को सुझाव और प्रेरणा दी।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि छात्र-काल का जीवन निर्माण का काल है। इस छात्रकाल में प्राप्त हुए संस्कार जीवन की निधि बनते हैं। आचार्यप्रवर एवं चारित्रात्माओं के दर्शन एवं सान्निध्य का मूल्य बताया।

इस अवसर पर मुकेश गादिया (आईआरएस) ने विद्यार्थियों को कहा कि छात्र अपने कैरियर का एक्शन प्लान बनाएँ और पूरी तरह मेहनत करके अपने लक्ष्य को हासिल करें, की प्रेरणा दी।

टीपीएफ के मुख्य न्यासी एमसी बलदोता ने अपने वक्तव्य में छात्रों को बताया कि अपने माता-पिता की सेवा करें। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष टीपीएफ फारएम संजय धारीवाल ने सभी छात्रों को मनोबल बढ़ाते हुए जैन और तेरापंथ धर्म से जुड़े रहने के फायदों से अवगत करवाया।

टीपीएफ, बैंगलोर के अध्यक्ष लक्ष्मीपत मालू एवं सचिव श्रवण सियाल के साथ अन्य सदस्यगण ने साध्वीश्री जी के सान्निध्य में सभी ७० छात्र-छात्राओं का पदक एवं प्रमाण-पत्र द्वारा सम्मान किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में टीपीएफ परामर्श के स्टिकर का अनावरण किया।

मेधावी कार्यक्रम में गौरवमयी उपस्थिति गांधीनगर सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, आरआर नगर युवक परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली, महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना ने मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रेरणा देने वाला वक्तव्य दिया। सचिव श्रवण सियाल ने अंत में सभी का आभार व्यक्त किया। टीपीएफ, बैंगलोर टीम के सभी सदस्यों ने अपने श्रम और प्रयास से कार्यक्रम को सफल बनाया।

सामूहिक सामायिक

हैदराबाद।

सम्यक् सामायिक का आयोजन तेरापंथ भवन में बहनों द्वारा किया गया। सामायिक में बहनों द्वारा सबसे पहले नमस्कार महामंत्र का जाप किया। आचार्यश्री भिक्षु की तेरस के उपलक्ष्य में भिक्षु स्वामी का गीत उच्चारित किया गया। भिक्षु स्वामी जी का ७ मिनट ओम भिक्षु का जाप किया गया। हर्षलता ने बहनों को जाप का महत्त्व समझाया।

'साधु-संतों का विहार' विषय पर चर्चा की गई। सुमन दुगड़, प्रेम सुराणा, नमिता सिंधी, अंजु गोलछा, सुमन श्यामसुखा आदि ने इस पर अपने विचार रखे। नमिता सिंधी ने कविता के माध्यम से सामायिक जॉन को रास्ते की सेवा का सुझाव दिया।

हर्षलता दुधोड़िया ने बताया कि जिस प्रकार हम अपने बच्चों की तन्मयता से जिम्मेदारी निभाते हैं, उसी प्रकार साधु-संतों की रास्ते की सेवा करना भी, प्रत्येक श्रावक का धर्म है। कई बहनों ने उपवास, विगय त्याग, एक घंटा मौन, द्रव्य सीमा का संकल्प लिया।

मंडल की अध्यक्षा अनीता गीड़िया ने प्रमुखाश्री जी के ५०वें अमृत महोत्सव पर ५१ त्याग के संकल्प करने की, सभी बहनों को प्रेरणा दी। अखिल भारतीय क्विज 'विजडम वेडनेस डे' और नारी लोक में आने वाले 'ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी' को भी सभी को करने की प्रेरणा दी गई। सभी बहनों ने ५१ त्याग के संकल्प करने की जागरूकता दिखाई। सामायिक में हर्षलता दुधोड़िया, अनिता गीड़िया, सुमन दुगड़, नमिता सिंधी, अंजु गोलछा, विनीता बोथरा, रेखा गोलछा, पुखराज धाड़ेवा, सुशील बैंगानी, प्रेम सुराणा, सुमन श्यामसुखा आदि की उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह

चलथान।

मुनि सुव्रत कुमार जी स्वामी आदि का २१ दिनों के मंगल पावन प्रवास की अंतिम रात्रि पर तेरापंथ सभा, चलथान द्वारा तेरापंथ भवन में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप की सहभागिता रही। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के द्वारा मंगलभावना समारोह की शुरुआत की गई।

तेरापंथ सभा, वरिष्ठ श्रावक तेजमल नौलखा ने मुनिश्री के पावन प्रवास में हुई कोई भी अविनय असाधना के लिए बारंबार खमतखामणा प्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने मुनिश्री के विहार एवं आगे के प्रवास के प्रति मंगलकामना की। मंगलभावना समारोह में तेयुप परामर्शक राजेश सिंघवी, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका बाली खाब्या, महिला मंडल अध्यक्षा मीना नौलखा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष लीना चोरड़िया, वंदन दुगड़, हेनिल दक ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया ने किया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन की परीक्षा

राउरकेला।

अभातेममं के उपक्रम आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत राउरकेला महिला मंडल द्वारा तत्त्वज्ञान की परीक्षा तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। राउरकेला से तत्त्वज्ञान के कुल चार परीक्षार्थी थे। कविता डागा, हेमश्री भंसाली और कनक बोथरा ने यहाँ परीक्षा दी और राजू नाहटा ने मुंबई से परीक्षा दी।

राउरकेला तत्त्वज्ञान व्यवस्थापिका सरिता कोचर, अध्यक्ष सरोज गोलछा और निवर्तमान अध्यक्ष पुनीता बोथरा ने जागरूकता से व्यवस्था को संभाला। पूरी प्रामाणिकता के साथ परीक्षा संपन्न करवाई गई।

स्नेहम प्रोजेक्ट आयोजित

राजाजीनगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार 'स्नेहम प्रोजेक्ट' के अंतर्गत तेममं द्वारा 'दा कर्नाटक वैलफेयर एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड' में दिव्यांग बच्चों के लिए स्टेशनरी, ब्रेल पेपर्स, लैंग्वेज बुक और खाद्य एवं अन्य सामग्री वितरण के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा सामुहिक नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भिक्षु धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष मदनराज नाहर, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, नवचेतना एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष एल० लोकेश व उनकी धर्मपत्नी वनिता लोकेश की उपस्थिति रही। अध्यक्ष चेतना वैदमूथा ने सभी पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया। राजाजीनगर तेरापंथ सभा से महावीर मेहता, धर्मेन्द्र बरलोटा सहित महिला मंडल के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी बहनें एवं कन्या मंडल की उपस्थिति रही।

मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल ने पधारे हुए अतिथियों का परिचय दिया।

स्नेहम प्रोजेक्ट में चौधरी परिवार का विशेष योगदान रहा। स्कूल के जनरल सेक्रेटरी पराशिवमूर्ति ने पधारे हुए अतिथियों एवं महिला मंडल के इस प्रोजेक्ट की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष उषा चौधरी ने किया। कोषाध्यक्ष सोनाल मेहता ने आभार ज्ञापन किया।

ब्लड डोनेशन कैंप

राउरकेला।

अभातेममं के निर्देशानुसार 'चलें गाँव की ओर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत राउरकेला महिला मंडल ने ब्लड डोनेशन कैंप लगाया। साथ ही हेल्थ कैंप जिसमें ब्लडशुगर और ब्लडप्रेशर टेस्ट हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० पात्रो थे जिनका अब तक का रिकॉर्ड है १४६ बार ब्लड डोनेट करने का। उन्होंने मानवता के इस नेक कार्य की सराहना की और सभी को ब्लड डोनेट करने के लिए प्रेरित किया।

कुल ४५ यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया। मंडल की कुछ बहनों ने भी ब्लड डोनेट किया। इसमें तेरापंथ युवक परिषद का विशेष सहयोग रहा। तेयुप के अध्यक्ष विशाल कोठारी, एवं सभा के अध्यक्ष विक्रम बोथरा अपनी-अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। मंडल की बहनों ने कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से किया।

महिला मंडल की अध्यक्ष सरोज गोलछा ने सभी का स्वागत किया और मंत्री बिनीता जैन ने अपने वक्तव्य में लोगों को ब्लड डोनेट करने के फायदों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। वहाँ उपस्थित परामर्शिका कनक बोथरा, निवर्तमान अध्यक्ष पुनीता बोथरा, उपाध्यक्ष सरिता कोचर, सहमंत्री कविता डागा, रेशम दुगड़, हर्षिता सोमानी, सुमन डोशी, कोमल डोशी, नेहा कोठारी सभी का अच्छा योगदान रहा।

प्रेक्षावाहिनी कार्यशाला का आयोजन

उत्केला।

स्थानीय तेरापंथ भवन, उत्केला में प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षावाहिनी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सौरभ जैन के द्वारा प्रेक्षा गीत से कार्यशाला प्रारंभ हुई। ज्ञानशाला से दिशा, विधि तथा सिद्धि जैन ने त्रिपदी वंदना का संगान किया। प्रेक्षा साधिका मोनू जैन ने मंगलभावना मंत्र, प्रेक्षा उद्बोधन तथा प्रेक्षाध्यान करवाया। अंत में सूचना तथा समापन विमल जैन ने किया। कार्यशाला में १६ साधक-साधिकाओं ने भाग लिया।

✦ *अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु भक्ति संध्या के विविध आयोजन

चलथान

तेयुप द्वारा तेरस निमित भिक्षु भक्ति संध्या के कार्यक्रम का आयोजन मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी, मुनि मंगलप्रकाशजी, मुनि शुभमकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी ने गीत से की। भिक्षु भक्तों ने 'ओम भिक्षु नमो नमः, जय भिक्षु नमो नमः, स्वामी भिक्षु नमो नमः, गुरुवर भिक्षु नमो नमः' का सामूहिक जाप किया। सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया ने भिक्षु भक्ति संध्या में पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया।

भक्ति संध्या का आयोजन मुनिश्री के सान्निध्य में किया गया। भक्ति संध्या के कार्यक्रम को तेरापंथ युवक परिषद, चलथान के फेसबुक पेज पर भी लाइव किया गया। भक्ति संध्या कार्यक्रम के संयोजक संस्कार प्रभारी भाविक बाबेल, संस्कार सहप्रभारी निर्मल दक द्वारा भक्ति संध्या की रूपरेखा पहले से तैयार की जाती है। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया, ख्यालीलाल दक, बालचंद दक, नेमीचंद बाफना, चांदमल बाफना, गणेशलाल श्रीश्रीमाल सहित लगभग ७० भिक्षु भक्तों की उपस्थिति रही। भक्ति संध्या में बाली खाब्या, सुरेशचंद्र पितलिया, मीना नौलखा, रंजूला सिंघवी ने भी प्रस्तुति दी। तेयुप मंत्री दीपक खाब्या ने तेयुप, चलथान की ओर से आभार ज्ञापन किया।

पूर्वांचल-कोलकाता

तेयुप ने अपनी भजन मंडली पूर्वांचल स्वर लहरी के साथ धम्म जागरण का आयोजन किया, इसमें सहयोगी रहे तेरापंथी सभा-पूर्वांचल-कोलकाता, तेरापंथी सभा-सॉल्टलेक व पूर्वांचल महिला मंडल।

पूर्वांचल स्वर लहरी के गायकों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। परिषद से हेमंत बैद, मनोज चिंडालिया, राजीव जैन, मुदित पुगलिया, यश पुगलिया, गजराज सेठिया, किशोर मंडल पूर्वांचल से हर्षित-अर्पित मालू ने महामना भिक्षु को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में दिल्ली के सुप्रसिद्ध गायक राकेश चिंडालिया ने चार-चाँद लगा दिए।

कार्यक्रम में विशिष्ट उपस्थिति रही पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष एवं परामर्शक संजय सिंघी, मंत्री प्रवीण पगारिया, परिषद परामर्शक पंकज डोशी, पंकज नाहटा, भिक्षु धम्म जागरण के प्रायोजक पवन हीरावत व समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का लाइव प्रसारण फेसबुक पर किया गया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के सहमंत्री एवं स्वर लहरी के प्रभारी राजीव खटेड़ ने किया। परिषद ने भिक्षु धम्म जागरण के प्रायोजक लक्ष्मीपत पवन कुमार पारस हीरावत, पड़िहारा-कोलकाता के पवन हीरावत को मोमेंटो प्रदान कर आभार व्यक्त किया।

साउथ हावड़ा

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा महामना भिक्षु के सुदी तेरस के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन कार्यसमिति सदस्य दीपक नखत के निवास स्थान में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया एवं अपने वक्तव्य में महामना भिक्षु को याद करते हुए उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

साउथ हावड़ा की युवा शक्ति ने भिक्षु स्वामी के प्रति अपनी अभिव्यक्ति सुमधुर भजनों एवं गीतिकाओं के माध्यम से दी। उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री-द्वितीय राहुल दुगड़, भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बांठिया, सह-संयोजक रोहित बैद, ऋषभ दुधोड़िया, मनीष बैद, विकास कोचर ने उपस्थित होकर भजनों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक हर्ष बांठिया ने किया। उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन अमित बेगवानी ने किया।

विजयनगर

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य—आचार्यश्री भिक्षु की मासिक पुण्यतिथि पर धम्म जागरण का आयोजन तेयुप द्वारा संचालित विजय स्वर संगम के द्वारा संयोजक ऋषभ बरड़िया के निवास पर हुआ। कार्यक्रम में अनेक भिक्षु भजनों का संगान किया गया। सुमधुर गायक परिषद पूर्व अध्यक्ष अशोक कोठारी, सरगम-२०२१ के फाइनलिस्ट गुलाब बांठिया, देवेंद्र नाहटा एवं विजय स्वर संगम के साथियों द्वारा अनेक भजनों की प्रस्तुतियाँ दी गई।

इस अवसर पर राजस्थान परिषद के अध्यक्ष बालचंद चिंडालिया, सरदारशहर परिषद के अध्यक्ष पवन बुच्चा, राजस्थान परिषद के पूर्व अध्यक्ष सूरज चिंडालिया, परिषद उपाध्यक्ष प्रवीण गन्ना, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा एवं कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। परिषद मंत्री विकास बांठिया ने परिषद की ओर से बरड़िया परिवार एवं पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष अभिषेक कावड़िया ने किया।

अमरनगर

अभातेयुप द्वारा अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन में विशाल भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। आचार्य भिक्षु की अभिवंदना में आयोजित इस कार्यक्रम में चेन्नई से समागत गायक राकेश मांडोत, स्थानीय कलाकार जितेंद्र गोगड व सुनील बैद ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की गीतिका से हुआ।

कार्यक्रम में मुनि तत्त्वरुचि जी, मुनि संभवकुमार जी द्वारा भिक्षु भजन व तेयुप, सरदारपुरा द्वारा तेरापंथ प्रबोध का संगान किया गया। भक्ति संध्या में राकेश ने भक्ति गीतों का मधुर संगान किया।

कार्यक्रम के संयोजक स्वरूप चौपड़ा ने बताया कि भक्तिमय शाम के प्रायोजक दिलीप सिंघवी परिवार व उम्मेदराज, विनोद सिंघवी परिवार थे। कार्यक्रम में तेयुप, सरदारपुरा द्वारा आमंत्रित भजन गायक राकेश, बीकानेर से समागत वाद्य यंत्र वादक टीम, कार्यक्रम के प्रायोजक परिवार का शॉल व जोधपुरी साफा पहनाकर सम्मान किया गया।

तेयुप अध्यक्ष महावीर चौपड़ा ने बताया कि इस अवसर पर अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष मर्यादा कुमार कोठारी, महासभा से विजयराज मेहता, अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर तेयुप, सरदारपुरा के विकास चोरड़िया, रतन चौपड़ा, सतीश बाफना, विकास चौपड़ा, निर्मल छल्लाणी, विनय तातेड़, योगेश तातेड़, ऋषभ छल्लाणी, सौरभ बाफना आदि का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन कार्यक्रम सह-संयोजक मीडिया प्रभारी राहुल छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कैलाश जैन ने किया।

✦ *जो कार्यकर्ता नाम, ख्याति, पद आदि की भावना से दूर रहकर कर्तव्यभाव से, निःस्वार्थ भाव से कार्य करता है, उसे उत्तम श्रेणी का कार्यकर्ता कहा जा सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रम

लोकोपकार मासिक सेवा

बैंगलुरु।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, बैंगलोर द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस' के उपलक्ष्य पर एवं तेयुप द्वारा लोकोपकार मासिक सेवा के अंतर्गत संयुक्त सहयोग से जयनगर स्थित जे०एस०एस० सहाना इंटीग्रेटेड एंड स्पेशल स्कूल में सेवा कार्य किया गया।

प्रधानाध्यापक दोड्डगुड्डय्या ने सभी का स्वागत करते हुए संस्था द्वारा विकलाग बच्चों को दी जा रही सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्था द्वारा एक सौ बच्चों की देखरेख की जा रही है, जिसमें कोरोना महामारी की वजह से फिलहाल ६५ बच्चे संस्था की सेवा ले रहे हैं। तेयुप, बैंगलुरु के अध्यक्ष विनय बैद ने संस्था द्वारा दी जा रही सेवा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बच्चों को प्रोत्साहित किया।

किशोर मंडल संयोजक जतिन बोराणा ने मंडल द्वारा बच्चों को भेंट की जा रही सामग्री की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी बच्चों में वितरण किया। विशाल, हर्षवर्धन व प्रियदर्शिनी द्वारा गीत व नृत्य का सुंदर प्रदर्शन किया गया। रामप्रसाद ने कन्नड़ भाषा में अनुवाद करने में सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम के प्रायोजक बरार निवासी चामराजपेट प्रवासी बोराणा परिवार रहे। सेवा हेतु अनुमति देने पर संस्था के प्रति, उपस्थित सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं के प्रति व विशेषकर बच्चों के प्रति आभार तेयुप उपाध्यक्ष भेरूलाल पोखरणा ने माना। किशोर मंडल प्रभारी पंकज मंडोत का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

बादामी देवी आश्रम में सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के त्रिआयाम—सेवा, संस्कार, संगठन जिसमें सेवा के अंतर्गत अभातेयुप की शाखा तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा क्षेत्र के बादामी देवी आश्रम में अरविंद कुमार भंसाली के जन्मदिन पर परिवार के सहयोग से सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामुहिक मंगलाचरण के साथ किया। तेयुप के उपाध्यक्ष मनीष बैद ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के लगभग २३ बच्चों को सुबह का नाश्ता, मिठाई, चॉकलेट का वितरण परिषद के युवाओं एवं पारिवारिकजनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, संगठन मंत्री सुमित कुमार बैद, सामाजिक कार्य के संयोजक समित कुमार बैद, मनीष बैद, सह-संयोजक दीपक नखत सहित नवीन सेठिया की उपस्थिति रही।

परिवार से अरविंद भंसाली ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के संयोजक दीपक नखत ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

डॉ० धीरज मरोठी की निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १७ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप के अध्यक्ष विकास सिंघी, परिषद के कार्यसमिति सदस्य, अभातेयुप साथी एवं एटीडीसी के प्रभारी नरेंद्र छाजेड़ एवं सह-प्रभारी हेमंत बैद की उपस्थिति से कैंप अत्यंत सफल रहा। तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए भी विशेष साधुवाद प्रेषित किया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नाटिका का आयोजन

बेलूर।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में बाली-बेलूर क्षेत्र के तेरापंथ ज्ञानशाला के बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम एवं नाटिका का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें जानवी डागा ने ज्ञानशाला का गीत गाकर कार्यक्रम का प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम की वेस्ट बंगाल की संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, बेलूर वाली सभा के अध्यक्ष अरुण नाहटा और बेलूर एरिया संयोजिका ममता नाहटा तथा प्रशिक्षित मंजु घोड़ावत ने संयोजन किया।

इस कार्यक्रम में तेयुप, लिलुआ के कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर अपनी सहभागिता दर्ज कराई साथ ही बच्चों के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया। सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

गुलाबी नगरी में हुआ मंथन कार्यशाला का आयोजन

जयपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान एवं तेयुप, जयपुर के आयोजकत्व में गुलाबी नगरी, जयपुर के लोढ़ा इम्पेक्स में अभातेयुप के सम्मानित पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण एवं वर्तमान पदाधिकारीगण की गरिमामयी उपस्थिति में 'मंथन कार्यशाला' का आयोजन हुआ।

कार्यशाला में प्रारंभ से पूर्व लोढ़ा इम्पेक्स प्रांगण मं जैन ध्वज का झंडारोहण किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने समागत अध्यक्षगण का अभातेयुप की ओर से बैज लगाकर सम्मान किया।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। विजय गीत का सामूहिक संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पूर्व अध्यक्ष सुखराज सेठिया द्वारा किया गया। तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने आगंतुक अतिथियों के स्वागत में अपने भाव व्यक्त किए।

अध्यक्षीय एवं स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने परम पूज्य आचार्यप्रवर को वंदना निवेदित करते हुए सभी आगंतुक, पूर्व अध्यक्षगण एवं वर्तमान प्रबंध मंडल का मंथन कार्यशाला में अभातेयुप की ओर से स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा–'गुरु इंगित की प्रतिपल आराधना हो, संघ-संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा हो, सभी युवा साथियों का साथ हो। इस सत्र की प्रथम कार्यसमिति बैठक से पूर्व अग्रज भ्राताओं के साथ बैठकर चर्चा-चिंतन करने एवं उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिल रहा है। यदि हम भूल करें तो वे हमारा मार्गदर्शन करें। उनके अनुभवों का लाभ संगठन को प्राप्त हो। पूर्व अध्यक्षों ने अपने-अपने कार्यकाल में अभातेयुप के आयामों को आगे बढ़ाया। इस सत्र में पूज्य गुरुदेव ने कृपा कर मुमुक्षु निर्माण का नया आयाम अभातेयुप के माध्यम से हमें दिया है, जिसका नाम रखा गया है 'वीतराग पथ'। इस दिशा में भी हमें सामूहिक रूप से मिलकर प्रयास करना है।

कार्यशाला में उपस्थित सभी पूर्वाध्यक्षों ने अभातेयुप के संदर्भ में अपने विचार एवं अपने कार्यकाल के समय के संस्मरण प्रस्तुत किए, जो इस प्रकार हैं–

पूर्व अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि युवाओं के लिए नैतिकता, प्रामाणिकता, चरित्र निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। युवा शक्ति की प्रतिभा, सोच, चिंतन देखकर गौरव होता है। किशोर मंडल को रोचक कार्यक्रम दिए जाएँ। संगठन यात्राओं का दौर चले, उसमें जो प्रमाद भाव मिलता है, वह अनिर्वचनीय है। दायित्व का विकेंद्रीकरण करें। समाज की प्रतिभाओं की शासन-प्रशासन में भागीदारी कैसे बढ़े, इस पर चिंतन व कार्य हो।

पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल पुगलिया ने कहा कि अभातेयुप के माध्यम से संघ व संगठन के लिए कुछ करना है। इस बदलते युग के साथ सोच व विजन को बदलना होगा। आध्यात्मिक, व्यवहारिक व सामाजिक–तीन पक्ष युवाओं के पास हैं। युवाओं को तीनों में सामंजस्य बिठाते हुए आगे बढ़ना है। गुरुदेव ने आयाम दिया, मुमुक्षु तैयार करो, उसके लिए देश भर में आध्यात्मिक कार्यशालाएँ, तत्त्वज्ञान कार्यशालाएँ आयोजित हों।

पूर्व अध्यक्ष मर्यादा कोठारी ने कहा कि अभातेयुप के संस्कार निर्माण के आयाम पर पुनर्चिंतन हो। तेयुप से जुड़े लोग वीतरागता के पथ पर आगे बढ़ें। तेयुप कार्यकर्ताओं की फैक्ट्री है। जिस शहर, गाँव में संगठन यात्रा हो, उस क्षेत्र के अभातेयुप के अलंकरण प्राप्तकर्ताओं को बैठक, कार्यक्रम आदि में आमंत्रित किया जाए। मंथन कार्यशाला में कम से कम पाँच प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर गुरुदेव को निवेदन किए जाएँ, फिर उस पर दृष्टि अनुसार कार्य प्रारंभ हो। तेरापंथ प्रचेता तैयार हों। तेरापंथ व जैन दर्शन के सिद्धांत की जानकारी हो, तभी हम जैन व तेरापंथी होने का गौरव कर सकते हैं।

पूर्व अध्यक्ष गौतम डागा ने कहा कि किसी एक दिनांक या तिथि को देश-विदेश में तेयुप दिवस के रूप में मनाया जाए। उस दिन सभी शाखा परिषदें ध्वजारोहण, प्रभात फेरी, कार्यक्रम आदि का आयोजन करें। कार्यप्रणाली में एकरूपता हो, नियमों का कड़ाई से पालन हो। श्रावक संदेशिका हमारी बाईबिल है, संगठन व शाखाओं में उसकी पूरी अनुपालना हो। युवकों में आध्यात्मिक गतिविधियों को बल मिले। प्रगति के साथ मूल सिद्धांत नहीं छूटें। युवावाहिनी के अंतर्गत युवाओं को गोचरी आदि की पूरी जानकारी हो।

पूर्व अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि युवकों को जैनत्व की, तेरापंथ की न्यूनतम आचार संहिता की जानकारी हो। अधिवेशनों, बैठकों आदि के खर्च को कम करके ए०टी०डी०सी० आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल जैसी उपयोगी स्थायी प्रवृत्तियों में उस राशि का उपयोग करें। संगठन को स्वावलंबी बनाने की दिशा में कार्य हो।

पूर्व अध्यक्ष बी०सी० जैन भालावत ने कहा कि नई पीढ़ी को अभातेयुप के साथ कैसे जोड़ें, इस पर चिंतन हो। अभातेयुप के नियमित खर्चों की पूर्ति हेतु चिंतन करें। तेरापंथ टाइम्स के स्वरूप में समयानुकूल परिवर्तन हो। समाज के कम से कम १०० जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा में सहयोग करें। उन्हें लोन के रूप में भी सहयोग दिया जा सकता है। अभातेयुप ऐसे जरूरतमंद बच्चों की खोज करें, फिर उन्हें किसी ट्रस्ट या अनुदानदाता के माध्यम से लोन दिलाया जा सकता है।

पूर्व अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कहा कि शाखा परिषदों को भी डिजिटल बनाना होगा। शाखा परिषदों की ट्रस्ट डीड के बारे में जागरूकता हो, इस कार्य में अभातेयुप उनको सहयोग करें। चयनित शहरों में किराए पर स्थान लेकर छोटे स्वरूप में आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल के आयाम को आगे बढ़ाया जा सकता है। श्रावक संदेशिका की जानकारी एवं कल्याण परिषद के वे निर्णय जो शाखा परिषद या श्रावक समाज से संबंधित हों, उनकी जानकारी युवाओं व परिषदों तक पहुँचनी चाहिए। एटीडीसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स के कार्य को आगे बढ़ाया जाए।

उपाध्यक्ष-द्वितीय जयेश मेहता, सहमंत्री-प्रथम अनंत बागरेचा, सहमंत्री-द्वितीय भूपेश कोठारी, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा एवं संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्यशाला में पूर्वाध्यक्षों के अनुभवों से हमें संगठन के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला है। अभातेयुप के कितने युगों से हमारा साक्षात्कार हुआ है।

कार्यशाला में हुए चिंतन-मंथन के आधार पर पाँच प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए एवं निर्णय किया गया कि उन प्रस्तावों को परम पूज्य आचार्यप्रवर को निवेदित कर उन पर प्राप्त दृष्टि के अनुसार यथायोग्य कार्ययोजना बनाकर आगे बढ़ा जा सकेगा।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कार्यशाला का उपसंहार करते हुए समागत सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। उन्होंने युवा गौरव दलपत लोढ़ा के प्रति विशेष आभार के भाव व्यक्त किए, जिन्होंने अपने प्रतिष्ठान में मंथन कार्यशाला के आयोजन हेतु स्थान एवं सारी व्यवस्थाएँ उपलब्ध करवाई तथा अभातेयुप टीम का आतिथ्य सत्कार किया। कार्यशाला की विभिन्न व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु तेयुप, जयपुर के प्रभारी अभिनंदन नाहटा, सुबोध पुगलिया एवं हितेश भांडिया के प्रति आभार ज्ञापित किया।

संपूर्ण कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष-प्रथम एवं कार्यशाला का संयोजन रमेश डागा ने किया।

✦ *धर्म सत्य, अहिंसा, नैतिकता आदि से संपृक्त है, वह अमर है। हमें उस अमर धर्म को परिपुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अच्छी बातों को सुनकर जीवन में उतारने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

पराना, १६ दिसंबर, २०२१

अखंड परिव्राजक, महायोगी, आचार्यश्री महाश्रमण जी सवाईमाधोपुर को पावन बनाने के उपरांत 14 किमी का विहार कर टोंक जिले के पराना गाँव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जिसके श्रवणेंद्रिय है, वह प्राणी पंचेंद्रिय है। कान है, तो अन्य अंग होंगे ही होंगे। पाँच इंद्रियाँ हैं—स्पर्शनेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिन्द्रिय और श्रोतेंद्रिय। जिसके केवल स्पर्शनेंद्रिय है, वह प्राणी सबसे कम विकास वाला है, ये पाँच प्रकार के स्थावर जीव होते हैं। ये एकेंद्रिय जीव होते हैं।

विकास के क्रम में द्विन्द्रिय, तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय और पाँच इंद्रिय वाले प्राणी आते हैं। चार इंद्रियों तक वाले प्राणी सकलेंद्रिय नहीं है, विकलेंद्रिय है। जिनके पाँचों इंद्रिय होते हैं, वे सकलेंद्रिय प्राणी होते हैं। मनुष्य, देवता, नारकीय व तिर्यंच पंचेंद्रिय सकलेंद्रिय होते हैं।

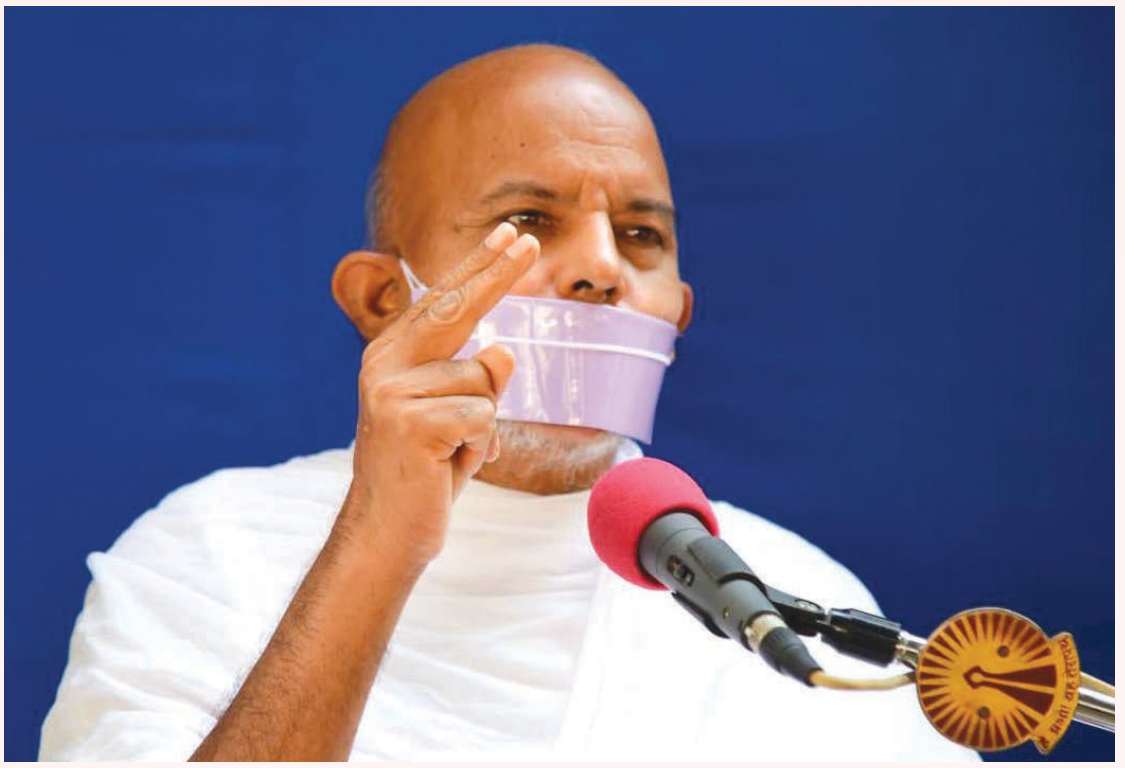

शास्त्र में कहा गया है कि सुनकर आदमी कल्याण को, अच्छी बात को, हितकारी चीज को जान लेता है। सुनकर आदमी पापकारी प्रवृत्तियों को भी जान लेता है। केवल जानना विकृति नहीं है। ज्ञान तो अपने आपमें क्षयोपशम भाव है। ज्ञान अपने आपमें शुद्ध-निर्मल तत्त्व होता है। तीन शब्द हैं—हेय, उपादेय और ज्ञेय। ज्ञेय यानी जानने लायक, हेय यानी छोड़ने लायक और उपादेय यानी ग्रहण करने लायक।

जानने लायक तो सभी पदार्थ हैं। नौ ही तत्त्व ज्ञेय हैं। जानने के बाद हेय कितने और उपादेय कितने हैं। आश्रव, पुण्य, पाप और बंध हेय है। संवर, निर्जरा और मोक्ष उपादेय है। हेय को छोड़ने का और उपादेय को अपनाने का प्रयास हो। जीव-अजीव को भी हेय मान सकते हैं। सुनकर आदमी कल्याण और पाप दोनों को जान लेता है।

जो श्रेय है, उसका आचरण करना चाहिए, बुरे का परित्याग रखना चाहिए। श्रवण शक्ति अच्छी है, यह श्रोतेंद्रिय की सक्षमता है। आदमी की पाँचों इंद्रिय परिजीर्ण होती जा रही हैं। इसलिए गौतम! समय मात्र प्रमाद मत करो। अच्छी बात सुनने से प्रेरणा मिल सकती है, यह एक प्रसंग से समझाया कि 'बहुत गयी, थोड़ी रही, रंग में भंग मत करो।' यह वाक्य बहुत बड़ी प्रेरणा देने वाला है। हम कानों से सुनें और अच्छी बात ग्रहण करने का प्रयास करें। यह हमारे लिए हितकर या अहित से बचाने वाला हो सकता है।

बराना के लोगों को पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए।

पूर्व विधायक मोतीलाल मीना जो प्रायः गुरुदेव की सेवा में आते रहते हैं, उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उन्होंने संकल्प किया है कि मैं अपने समाज में नशामुक्ति लाने का प्रयास करूँगा। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री अल्पकालीन विश्राम कर लगभग ढाई बजे सान्ध्यकालीन विहार के लिए गतिमान हुए। मार्गवर्ती गाँव के लोग आचार्यश्री के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इस क्षेत्र में मार्ग के दोनों ओर दूर-दूर तक सरसों की फसल लहलहा रही थी। उनके पीले फूलों ने मानों पूरी धरती को पीले आवरण से ढंक रखा था। लगभग सात किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री बरोनी गाँव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे और इस परिसर में रात्रिकालीन प्रवास किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**